ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०८० फरवरी २०२४

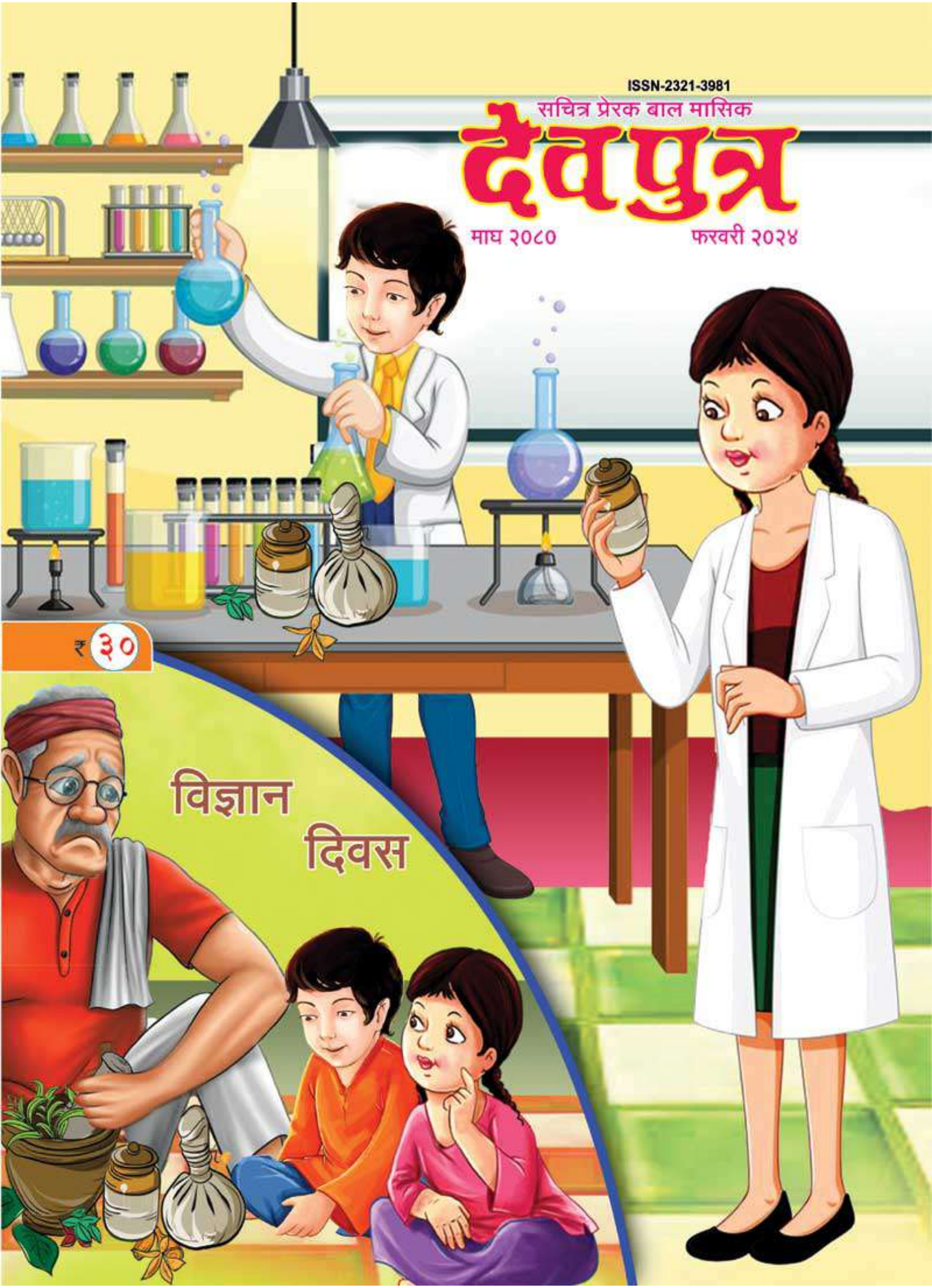

₹ ३०

विज्ञान दिवस

कविता

छोटी सी गुल्लक

– रूपाली सक्सेना

छोटी सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
सच्चे रिश्ते, मित्र सहेली,
थोड़ी–सी मार डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
दादी के किस्से, माँ की डाँट,
पिता का लाड़ डालूँगी।।

छोटी–इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
थोड़ा रोना, जल्दी उठना,
खुलकर हँसना डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
मिट्टी के घर, नदियाँ कलकल,
खुशियाँ हरपल की डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
बिल्ली मौसी, सूरज काका,
चंदा मामा भी डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
खट्टी इमली, कच्ची अमियाँ,
पक्के बेरों को डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।
काग़ज़ की नाव, कीचड़ में पाँव,
बरगद की छाँव डालूँगी।।

छोटी–सी इस गुल्लक में,
सब अच्छी यादें डालूँगी।

– भोपाल (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०८० ▪ वर्ष ४४
फरवरी २०२४ ▪ अंक ०८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

'वेद' भारतीय संस्कृति का मूल आधार हैं। कहा जाता है कि-

विनावेदं विनागीतां विना रामायणींकथाम्।
कालिदासं विना लोके कीदृशी भारतीयता।।

अर्थात्- वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण और कालिदास के साहित्य के बिना संसार में कैसी भारतीयता? अर्थात् सांस्कृतिक रूप से भारतीय होना है तो इन्हें जानना-समझना अनिवार्य है। वेद इन सबमें भी प्रमुख हैं। किसी मनुष्य की रचना न होने से, वेद 'अपौरुषेय' कहे जाते हैं। इन्हें आरंभ में लिखकर पढ़ा-पढ़ाया नहीं गया वरन् बोलकर सुना-सुनाया गया इसीलिए इनका एक नाम 'श्रुति' पड़ा। संसार के कल्याण हेतु वेदवाणी सर्वप्रथम भगवान ब्रह्मा ने प्रकट की।

आरंभ में एक ही वेद था ऋक्-वेद। कालान्तर में भगवान वेदव्यास ने इसे तीन भागों में विभाजित कर संपादित किया। ये ऋक्, यजु; और साम कहलाए। इन्हें 'वेदत्रयी' कहते हैं। इसके भी बाद में 'अथर्व वेद' इन्हीं में से निर्मित हुआ। वेदों से आयुर्वेद (स्वास्थ्य विज्ञान), धनुर्वेद (शस्त्र विज्ञान), गान्धर्ववेद (संगीत) एवं स्थापत्य विज्ञान का जन्म हुआ ये उपवेद कहलाए। वेदों के मंत्र 'ऋचा' कहलाते हैं ये ऋचाएँ ऋषियों व ऋषिकाओं ने रची हैं। वेदों को भारतीय संस्कृति के विरोधियों ने गडरियों के गीत कहकर उनका उपहास किया लेकिन वे नहीं जानते कि संसार के सारे ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत वेद ही हैं।

बच्चो! यह महर्षि दयानंद का २०० वाँ जयन्ती वर्ष है। वैसे तो शताब्दियों से अनेक ऋषियों, आचार्यों, विद्वानों ने वेदों के गूढ़ अर्थ सबको समझाने के लिए इनके 'भाष्य' किए। लेकिन महर्षि दयानंद वर्तमान युग में वेदों के सत्य-अर्थ को सर्वसाधारण के लिए सुलभ व सुगम बनाने के लिए परमादरणीय हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने वेदों की व्याख्या और अर्थ स्पष्ट करने हेतु 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की। वे केवल वैदिकज्ञान को ही मान्यता देते हैं।

वास्तविकता में वेद है भी इतने अगाध कि उनमें संसार के सभी ज्ञान का समावेश, कहीं प्रकट तो कहीं बीज रूप में मिलता है। वेदों में विज्ञान के भी सिद्धांत समाविष्ट हैं। हम सबको यथा संभव वेद का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- परि -राजीव सक्सेना १८
- खुशी को मिला मकई का दाना -प्रकाश 'मनु' २७
- टिम्मी के गोलगप्पे -डॉ. अलका अग्रवाल ४०

छोटी कहानी

- चन्द्रमा और चन्द्रयान -आस्था कौरव २२
- मेरा उड़न खटोला -प्राजक्ता देशपांडे ३०
- कलम की पूजा -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ३२

आलेख

- महान संत गुरु रविदास जी -डॉ. राकेश 'चक्र' ११

प्रसंग

- महर्षि दयानंद की गुरुभक्ति -वासुदेव प्रजापति ०५
- एक महादीप -जीवनप्रकाश 'आर्य' ०८

बौद्धिक क्रीडा

- बिना अटके पहुँचो -संकेत गोस्वामी ४४
- बाल पहेलियाँ -गोविन्द भारद्वाज ४९

कविता

- छोटी-सी गुल्लक -रूपाली सक्सेना ०२
- मोबाइल का ठसका -ओम उपाध्याय ३१
- ऐसे वीर शिवा महान -डॉ. उमेश प्रताप 'वत्स' ३३
- हम बच्चे -अनुराधा तिवारी 'अनु' ३४
- दुम में दम -डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी ४३
- ठंड चढ़ी तो जले अलाव -प्रभुदयाल श्रीवास्तव ४५

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १४
- आपकी पाती २१
- शिशु गीत -चन्द्रदत्त 'इन्दु' २३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २६
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३६
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी ३८
- छः अँगुल मुस्कान - ३८
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ४२
- पुस्तक परिचय - ४६
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ४९
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ५०
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

चित्रकथा

- पैसे वाला दोस्त -देवांशु वत्स ३५
- परेशानी -संकेत गोस्वामी ३९
- फँस गया गोलू -देवांशु वत्स ४७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच. परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

महर्षि दयानंद की गुरुभक्ति

– वासुदेव प्रजापति

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द आधुनिक युग में वैदिक धर्म के अद्वितीय महापुरुष हुए हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ में आपने वेदों के मर्म को भली भाँति समझाकर हिन्दू धर्म में आ चुकीं अनेक रूढ़ियों एवं विकृतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। ज्ञान प्राप्ति मैं सभी स्त्री-पुरुषों को समानता, हिन्दूधर्म से किन्ही कारणों से अलग हो चुके लोगों को पुन: घर वापसी जैसे समाज को सुसंस्कृत बनाने के अनेक कार्य आपने किए यहाँ आपकी गुरुभक्ति का एक प्रसंग, प्रस्तुत हैं। –संपादक

बात है संवत् १६१७ कार्तिक शुक्ला द्वितीया (वर्ष १८६०) की। इस दिन स्वामी दयानन्द मथुरा निवासी दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया का द्वार खटखटाते हैं। दण्डी स्वामी ने पूछा, कौन हो ? मैं दयानन्द, क्यों आए हो ? यही जानने तो आया हूँ...। गुरु से ज्ञान प्राप्त करने। उत्तर पाकर गुरु सन्तुष्ट हुए, तब कुटिया का द्वार खोला।

दयानन्द गुरु चरणों में नतमस्तक हुए, गुरु ने आशीर्वाद दिया और बोले– दयानन्द! तुम मुझसे पढ़ना चाहते हो किन्तु मैं मनुष्यकृत (अनार्ष ग्रन्थ) नहीं पढ़ाता, तथापि तुम मुझसे ही पढ़ना चाहते हो तो तुम्हें अनार्ष ग्रन्थों को त्यागना होगा।

दयानन्दजी ने गुरु आज्ञा को मानते हुए सबसे पहले अपने पास जितने भी अनार्ष ग्रन्थ थे उन्हें यमुना नदी में बहा दिया और आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन हेतु गुरु के सम्मुख उपस्थित हो गए। उनके रहने की व्यवस्था पहले ही दिन हो गई। मथुरा में विश्रामघाट पर एक लक्ष्मीनारायण जी का मंदिर था। मंदिर के नीचे प्रवेशद्वार के साथ एक कोठरी थी, वह उन्हें मिल गई। उसमें वे रहने लगे, रात्रि में उसी में सोते परन्तु कोठरी इतनी छोटी थी कि वे अपने पैर सीधे नहीं कर पाते थे, फिर भी वे सन्तुष्ट थे। उनका सन्तुष्ट होना भी स्वाभाविक था, वे जानते थे कि ज्ञानार्जन सुविधा एवं साधनों से नहीं होता, साधना से होता है और साधना करने में तो उनकी कोई सानी नहीं थी।

दयानन्द की गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा थी। गुरु विरजानन्द जी ब्रह्ममुहूर्त में साधना करते थे, वे प्रात: सायं यमुना नदी के जल से स्नान करते और नदी का जल ही पीते थे। गुरुजी को कोई असुविधा न हो इसलिए दयानन्द प्रतिदिन आठ-दस घड़े सुबह और आठ-दस खड़े शाम को यमुना में से भरकर अपने कंधे पर रखकर गुरु की कुटिया में पहुँचाते।

पीने वाले पानी के घड़े भरने हेतु वे तैरकर यमुना की गहरी धाराओं में जाते और पवित्र जल भरकर लाते। इस श्रमसाध्य कार्य में वे कभी भी विलम्ब नहीं होने देते। गुरुसेवा में सदैव अग्रणी रहते थे, दयानन्द।

उस वर्ष उत्तर भारत में अकाल पड़ा था। लोग दाने-दाने को तरस रहे थे। ऐसे में दयानंद के लिए पुस्तक, भोजन, आवास आदि की व्यवस्था भी कठिन ही थी पर कुछ सज्जनों के सहयोग से अति आवश्यक व्यवस्थाएँ प्राप्त हो सकीं।

इस विकट परिस्थिति में भी दयानन्द प्रतिदिन गुरुसेवा कर भ्रमण करते, स्नानादि से निवृत्त हो योगासन व प्राणायाम का अभ्यास करते, उसके उपरान्त संध्योपासना में मन लगाते और निश्चित समय पर विद्याध्ययन के लिए गुरु चरणों में उपस्थित हो जाते।

दयानन्द जैसा कठोर विद्यार्थी जीवन आज के विद्यार्थियों को असम्भव सा लग सकता है, किन्तु यह

वास्तविकता है कि तपने से ही सोने में निखार आता है।

संस्कृत व्याकरण के सूर्य दण्डी स्वामी विरजानन्दजी उस समय ८१ वर्ष के वयोवृद्ध एवं प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) होने के कारण स्वभाव से क्रोधी थे। फलत: शिष्यों से छोटी-सी बात पर भी क्रोधकर बैठते थे। एक दिन गुरु विरजानन्दजी अपने प्रिय शिष्य दयानन्द पर क्रोधित हो गए, उस समय उनके हाथ में डंडा था। उन्होंने डंडे का प्रहार दयानन्द पर कर दिया। गुरु के दण्ड प्रहार का शिष्य के मन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। गुरुभक्त दयानन्द ने बड़े ही विनम्र भाव से अपने गुरु से कहा- ''गुरुदेव! आप मुझे इस प्रकार न मारा करें। मैंने तो अपने शरीर को योगसाधना से वज्र जैसा कठोर बना लिया है। परन्तु इस कठोर शरीर पर प्रहार करने से आपके कोमल हाथों को ही पीड़ा होगी।'' यह भी सच है कि शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त जब कभी वे गुरु प्रदत्त चोटों के चिह्नों को देखते तो गुरु के उपकारों का स्मरण कर आनन्दित हो जाते।

ऐसा ही प्रसंग एक बार और आया, गुरु के क्रोध में आकर दयानन्द को दण्डित कर दिया। उस समय उनके एक भक्त नैनसुख जड़िया ने उस दृश्य को देखा, वे दयानन्द की प्रतिभा से परिचित थे। उन्होंने प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी से विनम्र निवेदन किया कि महाराज दयानन्द हमारे समान गृहस्थ नहीं हैं, वे संन्यासी हैं। उनके संन्यास आश्रम की मर्यादा का विचार कर उनके साथ इस प्रकार का कठोर व्यवहार न किया करें। गुरु विरजानन्दजी ने इस परामर्श को स्वीकार किया और कहा, मैं आगे से प्रतिष्ठा के साथ पढ़ाया करूँगा।

परन्तु दयानन्द के मन में तो गुरुजी के प्रति अपार भक्तिभाव था, वे नहीं चाहते थे कि गुरुजी उन्हें विशिष्ट शिष्य मानें। अत: उन्होंने नैनसुख जी से निवेदन किया कि आपको गुरुजी से ऐसा नहीं कहना चाहिए था। गुरुजी तो मुझे मेरे हित के लिए ही दण्डित करते हैं। मेरे प्रति उनमें तनिक भी द्वेषभाव नहीं है, यह तो उनकी मेरे प्रति कृपा ही है। गुरु के प्रति इस अगाध श्रद्धा, विनम्रता एवं अटूट भक्तिभाव के फलस्वरूप ही वे संस्कृत विद्वान बन पाए।

दण्डीस्वामी स्वभाव से क्रोधी अवश्य थे किन्तु दयानन्द को स्नेह भी अपार देते थे। वे दयानन्द जी की ग्रहणशक्ति और तर्कबुद्धि से अत्यधिक प्रभावित थे। पाठ पढ़ाते समय अनेक बार अपने शिष्यों से उनकी प्रशंसा करते हुए कहते थे कि- दयानन्द जैसा दूसरा कोई शिष्य नहीं है, मेरे सपनों की यही साकार रूप दे सकेगा। मेरे विचारों को सम्पूर्ण जगत में प्रतिष्ठा दिलाने की क्षमता केवल दयानन्द में है। गुरु विरजानन्द जी अपने शिष्य की प्रबुद्धता देख प्रसन्न होते और कहते, ''दयानन्द! इस कुटिया में अनेक शिक्षार्थी आए और चले गए, परन्तु मुझे तुझे पढ़ाने में

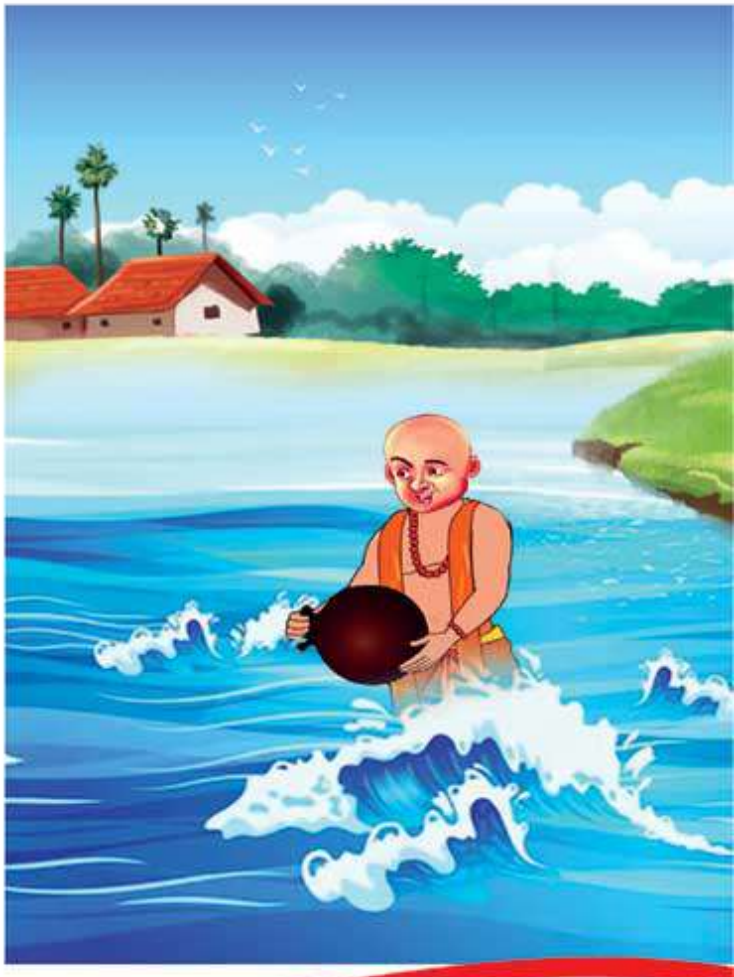

जो आनन्द मिलता है, ऐसा आनन्द पहले कभी नहीं मिला। तुम्हारी तर्कशक्ति विलक्षण है, कुमतों का खण्डन तुम ही कर पाओगे। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है।''

दयानन्द की स्मरणशक्ति अद्भुत थी। एक बार सुनी बात को वे भूलते नहीं थे। प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द जी को भी अपने शिष्य दयानन्द की स्मरणशक्ति पर पक्का विश्वास था, इसलिए वे दयानन्द को कोई भी पाठ पुन: नहीं पढ़ाते थे। एक बार दयानन्द अष्टाध्यायी की प्रयोग सिद्धि अपनी कोठरी पर पहुँचने से पहले ही भूल गए। स्मरण करने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु स्मरण नहीं हो पाई। उन्हें बहुत दु:ख हुआ, दौड़े-दौड़े गुरु चरणों में जा उपस्थित हुए। गुरुजी से वह प्रयोगसिद्धि पुन: बताने का निवेदन किया। गुरुजी ने निवेदन अस्वीकार कर दिया, वे दो-तीन दिन तक वही निवेदन करते रहे, परन्तु सफलता नहीं मिली। तीन दिनों तक मना करने के बाद गुरु ने अन्त में यह स्पष्ट कह दिया कि दयानन्द हम यह प्रयोगसिद्धि तुम्हें पुन: नहीं बतायेंगे और जब तक यह प्रयोगसिद्धि तुम्हें याद नहीं आयेगी तब तक हम तुम्हें अगला पाठ भी नहीं पढ़ायेंगे। कल भी यदि यह प्रयोगसिद्धि तुझे याद नहीं हुई तो भले ही यमुना जल में डूब मरना परन्तु मेरी कुटिया में कदम मत रखना।

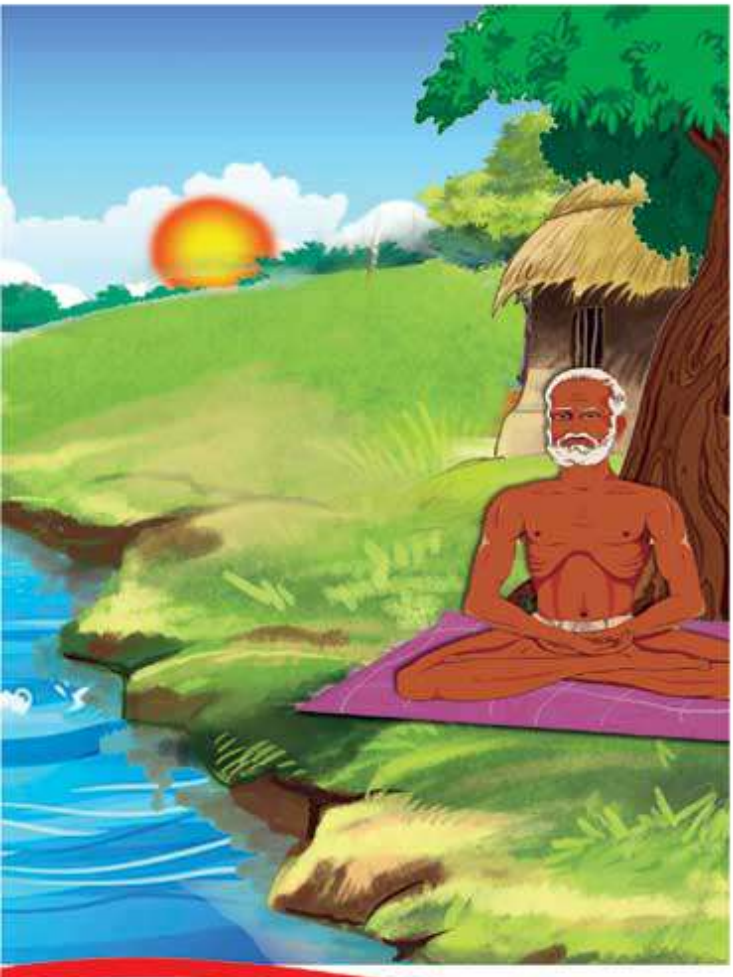

दयानन्द कुछ नहीं बोले, गुरु का चरणस्पर्श कर चुपचाप यमुना की ओर चल पड़े। मन ही मन संकल्प ले लिया कि यदि प्रयोगसिद्धि याद नहीं आई तो यमुना में समाधि ले लूँगा। वे सीताघाट के ऊपर तक पहुँच गए। वहाँ बैठे, समाधि लगाई और अष्टाध्यायी की भूली हुई प्रयोगसिद्धि पर ध्यान लगाया। अपने मन को इतना एकाग्र किया कि इस स्थूल देह का भान जाता रहा। उन्हें ऐसी अनुभूति हुई कि कोई व्यक्ति उनके सम्मुख खड़ा है और उन्हें भूली हुई प्रयोगसिद्धि पुन: सुना रहा है।

ज्योंही प्रयोगसिद्धि सुनाना पूरा हुआ त्योंही उनकी समाधि टूटी और चेतना लौट आई। वे अत्यन्त प्रसन्न थे, उन्होंने मन ही मन प्रयोगसिद्धि दोहराई तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था, पूरी की पूरी प्रयोगसिद्धि पाठ थी। भागे-भागे गुरु चरणों में पहुँचे और एक ही श्वास में सम्पूर्ण प्रयोगसिद्धि सुना डाली और समाधि अवस्था में घटी पूरी घटना भी बता दी।

सम्पूर्ण प्रयोगसिद्धि सुनकर गुरुजी भावविभोर हो गए और अपने प्रिय शिष्य को गले लगा लिया। गुरु और शिष्य दोनों के नयनों से आनन्दाश्रु की अविरल धारा बह रही थी। ऐसे संकल्प के धनी थे, स्वामी दयानन्द सरस्वती।

(सत्य के प्रकाशक स्वामी दयानंद सरस्वती पुस्तक से साभार)

- जोधपुर (राजस्थान)

एक महादीप

– जीवनप्रकाश आर्य

राजमहल के द्वार प्रहरी, श्रद्धा से हाथ जोड़े, शीश झुकाकर एक ओर हट गए। महर्षि ने धीर पगों से महल में प्रवेश किया। प्रात:काल का अरुणिम रवि, महल के प्रांगण में उतर कर अपनी कोमल रश्मियों से उस युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के चरण स्पर्श कर रहा था। महर्षि ने राजमहल के एक भृत्य से पूछा– ''महाराज कहाँ है मित्र ?''

भृत्य ने शीश झुकाए, मौन भाव से राज शयन कक्ष की ओर संकेत कर दिया। महर्षि शयन कक्ष की ओर बढ़े, तभी कक्ष का द्वार खुला और अस्त–व्यस्त वस्त्र, बिखरे केश सम्हालते हुए उनीन्दे से स्वयं महाराज बाहर आए। जगद्गुरु महर्षि दयानंद सरस्वती को सम्मुख देख, अचकचाते हुए दण्डवत प्रणाम किया।

महाराज के पास से नगर की प्रमुख नर्तकी अभी–अभी महर्षि को प्रणाम करते हुए गुजरी थी। महर्षि ने आशीर्वाद न देते हुए राजा को कठोर शब्दों में सचेत किया।

इन शब्दों ने जहाँ राजा के विवेक को झिंझोड़ कर जगा दिया वहीं महल के द्वार पर खड़ी नर्तकी के अस्तित्व में क्रोध की अग्नि भड़का दी। यह संन्यासी, उसे अपने कलुषित व्यवसाय का शत्रु लगने लगा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि जिस व्यक्ति के कारण उसके व्यवसाय, उसकी आजीविका, उसके जीवन पर संकट घिर आया है, उसे जीवित नहीं रहना चाहिए। मैं इस संन्यासी को जीवित नहीं रहने दूँगी, मैं इसके प्राण ले लूँगी। पर कैसे ?

यह संन्यासी अत्यंत लोकप्रिय है, इसके समर्थ अनुयायी, मुझे ऐसा नहीं करने देंगे।

मुन्नी बाई को प्रतिशोध के भाव ने क्रोधान्ध बना दिया था। उसने षडयंत्र रचा। महर्षि का भोजन बनाने वाले जगन्नाथ रसोइये को धन का लालच देकर अपने षडयंत्र का भागीदार बना लिया।

गुप्त षडयंत्र की योजना से एक साँझ जगन्नाथ ने महर्षि के भोजन में तीक्ष्ण विष मिला दिया। भोजन के पश्चात् महर्षि को आर्य समाज की एक विराट सभा में प्रवचन करना था। भोजन करके महर्षि ने निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रवचन प्रारंभ कर दिया। कुछ ही समय में महर्षि को विष का आभास हो गया।

विष से महर्षि का पुराना परिचय था। अनेक बार उन्हें विष दिया गया था, उस महान योगी ने हर बार यौगिक क्रियाओं के माध्यम से अपने शरीर से विष निकाल दिया था। मुन्नी बाई भी महर्षि की इन

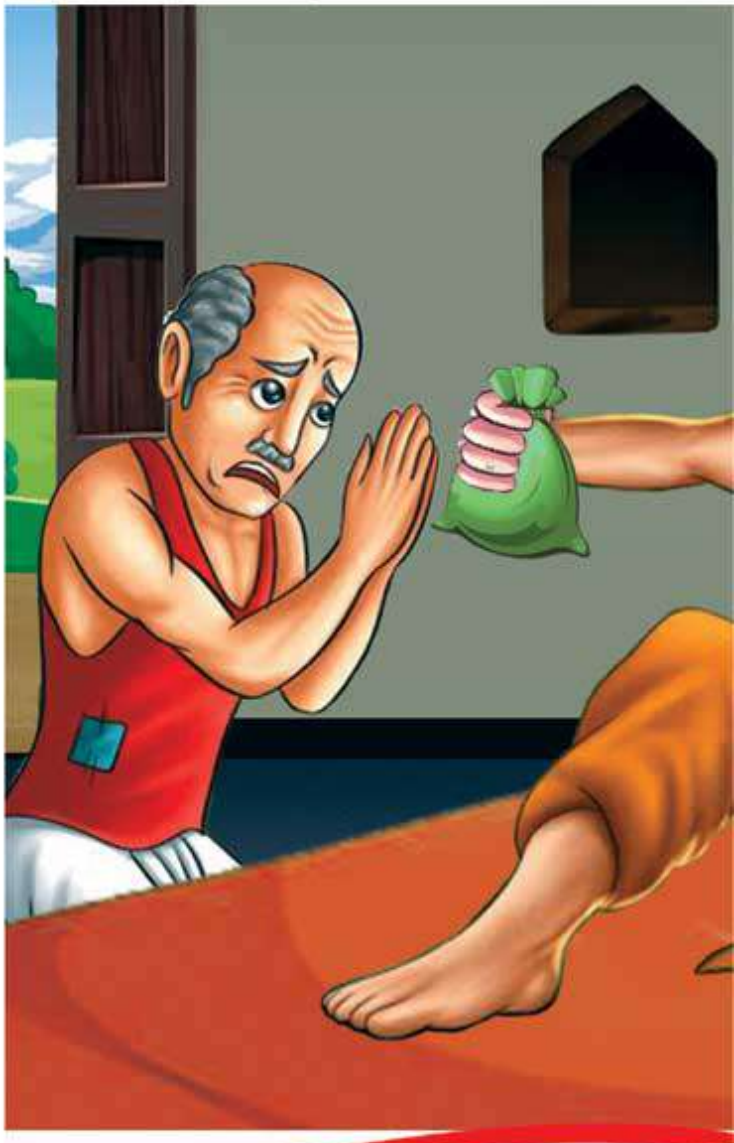

क्षमताओं से परिचित थी, अत: उसने ऐसे समय विष दिलवाया था कि महर्षि को विष निवारण का समय न मिल सके।

ऐसा ही हुआ। प्रवचन के मध्य विष शरीर में रचने लगा। प्रवचन को महर्षि ने स्थगित नहीं किया और विष उनके संपूर्ण शरीर में तीव्रता से फैल गया। यौगिक क्रियाओं की भी एक सीमा होती है। विष के प्रभाव ने उस सीमा का अतिक्रमण कर लिया। प्रवचन समाप्त कर लड़खड़ाते हुए महर्षि अपनी कुटिया में लौटे। शिष्यों को विष की सूचना दी तो तुरन्त चिकित्सक बुलाए गए, परीक्षण के उपरान्त चिकित्सक ने बताया कि विष का प्रभाव औषधि की मर्यादा भी पार कर चुका है। अब कोई उपचार प्रभावी नहीं होगा।

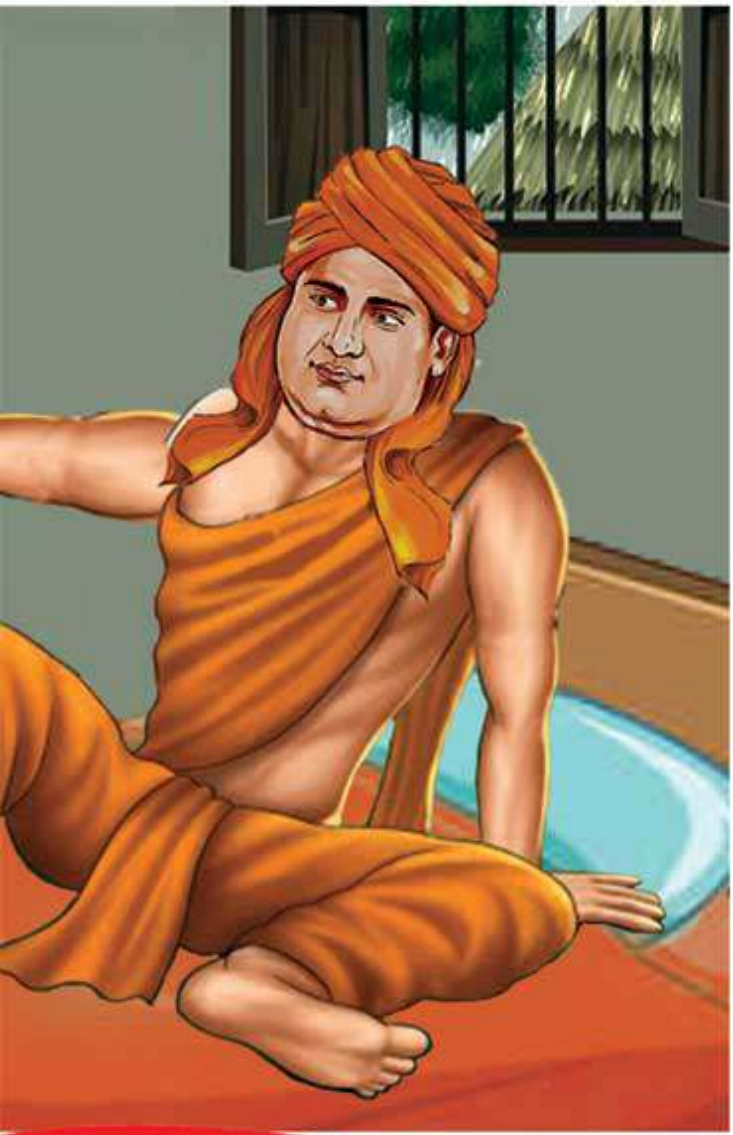

अन्त, अवश्यम्भावी हो गया। आर्य जगत में शोक और आक्रोश छाने लगा। शिष्यों के प्रयास से मुन्नी बाई का गोपन षडयंत्र प्रकट हो गया। भय और आत्म ग्लानि से रसोइया जगन्नाथ महर्षि के चरणों पर सिर पटक-पटक कर रोने लगा।

महर्षि ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए स्नेह से उसे गले लगाया और कहा- ''जगन्नाथ! तुमने जो किया वह उचित नहीं किया, मेरे प्रति तुमने जो अपराध किया है, उसे मैं क्षमा करता हूँ। पर मेरे शिष्य तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे। इसलिये मित्र! तुम यह धनराशि लो और मेरे शिष्यों के आने के पूर्व सुदूर नेपाल की ओर भाग जाओ।''

कठोर दण्ड की प्रतीक्षा में खड़ा जगन्नाथ, आश्चर्य चकित-सा महर्षि की ओर अपलक निहार रहा था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इस पृथ्वी पर कोई ऐसा मनुष्य भी हो सकता है जो अपने विषदाता को धन जीवन और सुरक्षा का दान कर सके। उसकी जड़ता को तोड़ते हुए महर्षि ने उसे हिलाया और पुन: कहा- ''शीघ्रता करो मित्र! वे लोग आ गए तो तुम्हारे प्राण नहीं बच सकेंगे। जाओ सुखी रहना।''

जगन्नाथ सिसकते हुए महर्षि के चरणों से लिपट गया। महर्षि ने पुन: उसे उठाया- ''जाओ मित्र! अपनी आत्मा को जगाओ। प्रभु तुम्हें सद्बुद्धि दें।''

रोते हुए जगन्नाथ चला गया, और महर्षि ? वे कुटिया के एकांत में शैय्या पर बैठे अपने जीवन का आकलन कर रहे थे। स्मृति के चित्र पटल पर जीवन का अतीत जाग उठा।

बाल्यकाल में पूज्य पिता श्री के आदेश तले महाशिवरात्रि के कठोर व्रत का अनुपालन, शिव मंदिर में भगवान शंकर के महालिंग के समक्ष शिव दर्शन की उत्कट अभिलाषा से सायास रात्रि जागरण, चूहों के

द्वारा शिव के नैवैद्य का भक्षण, शिव जी के प्राकट्य की टूटती आशा और पिता का संकेत कि यह शिवलिंग तो प्रतीक मात्र है, सच्चे शिव तो कैलास पर्वत पर रहते हैं। और फिर नन्हें बाल चरणों से डग मग चलते हुए कैलास पर्वत तक की कष्ट दायी अबूझ यात्रा। यह यात्रा भी शिव के दर्शन नहीं करवा सकी। तब भटकते हुए मथुरा में प्रज्ञा चक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के कुटी द्वार पर थाप देना। इसी थाप के प्रतिदान में आत्मज्ञान का प्रसाद पाना और फिर गुरु दक्षिणा के रूप में यही ज्ञान, जन-जन तक पहुँचाने के लिये एकाकी, पाँव पैदल निकल पड़ना। हरिद्वार के कुम्भ मेले में कोपीन धारी दयानन्द द्वारा पाखण्डखण्डिनी पताका गाड़ने से जो यात्रा प्रारंभ हुई तो अनेक शास्त्रार्थों से होकर आर्य समाज संगठन की स्थापना से परिपक्व हुई। आज राष्ट्र और समाज जाग उठा है।

इन प्रयासों से हिन्दू धर्म के अनुयायी, मूल धर्म, वेदों की ओर लौट रहे हैं। संपूर्ण पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, और भारत के अधिकांश भागों में आर्यसमाज सशक्त होकर अंधविश्वासों का उन्मूलन कर रहा है। स्वराज्य की प्राप्ति के प्रयास मुखर हो उठे हैं। नारी जाति को शिक्षा ओर सम्मान मिलने लगा है, सभी मनुष्य चाहें वे किसी भी जाति या लिंग के हों अब पवित्र वैदिक ऋचाओं से यज्ञ करने लगे हैं।

अपनी कुटिया में शय्या पर लेटे महर्षि के मुख पर असीम शांति के भाव थे। शरीर के अंग प्रत्यंग से विष फूटकर निकल रहा था। प्रात: अँग्रेज चिकित्सक आए और महर्षि के प्रशान्त मुख को देखकर चकित रह गए। उनके मत में इस विष से व्यक्ति असह्य पीड़ा अनुभव करता है। वह स्थिर नहीं रह सकता, चीखता है। पीड़ा के अतिरेक से पगला उठता है, पर यह महायोगी दयानन्द, रोम-रोम से बहते विषाक्त रक्त के मध्य स्मित वंदन, अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे थे। कुटिया के एक कोने में खड़े महा नास्तिक श्री गुरुदत्त, जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नकारते थे, वे भी महर्षि के इस स्वरूप को देख चकित थे। उनका जिज्ञासु मन पूछ उठा- मानवीय सीमाओं से परे यह सहनशक्ति आपमें कहाँ से आई ?

आज महा नास्तिक का मस्तक झुक गया। और इन क्षणों में वह विरोधी, महर्षि का अनुगत हो गया। अजमेर आर्यसमाज में उसी कुटिया में, कार्तिक अमावस्या, दीपावली के दिन प्रात: बेला में महर्षि ने अपने शिष्यों से कहा-

''सब द्वार गवाक्ष खोल दो।''

पूर्ण पद्मासन में बैठ कर उन्होंने ऊर्ध्वमुख हो वाचिक चिन्तन किया।

''हे प्रभो! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। तू ने अच्छी लीला की। ओ३म्।''

इन शब्दों के साथ ही जगद्गुरु देव दयानन्द ने ब्रह्म सार के माध्यम से अपने प्राण त्याग दिये। उस रात, भारत भर में करोड़ों दीपक प्रज्वलित कर यह महादीप सदा के लिए शांत हो गया।

- उज्जैन (म. प्र.)

वेदों के सत्यार्थ को करके स्वयं प्रकाश।
भ्रम के बादल नाश हर स्वच्छ किया आकाश।।
स्वच्छ किया आकाश ज्ञान का सूर्य प्रकाशित।
वेदज्ञान का कोष किया सब हित उद्घाटित।।
नारी नर हर वर्ण जाति के हर खेदों को।
दयानंद कृत आर्य समाज श्रेय वेदों को।।

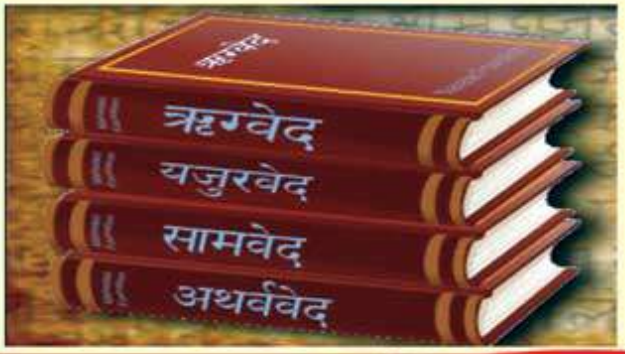

आलेख : २४ फरवरी संत रविदास जयंती

महान संत गुरु रविदास जी

– डॉ. राकेश चक्र

महान हिन्दू संत रविदास जी महामानव थे। उनके जीवन चरित्र के बारे में हम जानें सूक्ष्म इतिहास। सिंकदर और बाबर को भी मांगनी पड़ी थी क्षमा। एक कहावत बहुत चरितार्थ है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। यह कहावत महान संत रविदास जी को ही लेकर प्रारंभ हुई।

भारत के महान संत रविदास जी (रैदास) का जन्म वि. सं. १४३३ (१३७६ ई.) में माघ की पूर्णिमा को हुआ था।

गुरु रविदास जी का जन्म काशी में जाटव कुल में हुआ था। उनके पिता का नाम संतोष दास (रघू) और माता का नाम कलसा देवी बताया जाता है। जिस दिन उनका जन्म हुआ उस दिन रविवार था इस कारण उन्हें रविदास कहा गया। भारत की विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में उन्हें रईदास, रैदास व रहदास आदि नामों से भी जाना जाता है।

उन्होंने साधु–संतों की संगति से पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। जूते बनाने का काम उनका पैतृक व्यवसाय था और उन्होंने इसे सहर्ष अपनाया। वे अपना काम पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे और समय से काम को पूरा करने पर बहुत ध्यान देते थे।

प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु–संतों की सहायता करने में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्राय: मूल्य लिये बिना जूते भेंटकर दिया करते थे।

नौ वर्ष की नन्ही उम्र में ही परमात्मा की भक्ति का इतना गहरा रंग चढ़ गया कि उनके माता–पिता भी चिंतित हो उठे। उन्होंने उनका मन संसार की ओर आकृष्ट करने के लिए उनकी शादी करा दी और उन्हें बिना कुछ धन दिये ही परिवार से अलग कर दिया। फिर भी रविदासजी अपने पथ से विचलित नहीं हुए।

संत रविदास जी पड़ोस में ही अपने लिए एक अलग झोपड़ी बनाकर तत्परता से अपने व्यवसाय का काम करते थे और शेष समय ईश्वर–भजन तथा साधु–संतों के सत्संग में व्यतीत करते थे।

संत रविदास जी ने अपनी वाणी के माध्यम से आध्यात्मिक, बौद्धिक व सामाजिक क्रांति का सफल नेतृत्व किया। उनकी वाणी में निर्गुण तत्व का मौलिक व प्रभावशाली निरूपण मिलता है।

उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब भारत में मुगलों का शासन था चारों ओर गरीबी, भ्रष्टाचार व अशिक्षा का बोलबाला था।

युग प्रवर्तक स्वामी रामानंद उस काल में काशी में पंच गंगाघाट में रहते थे। वे सभी को अपना शिष्य बनाते थे। रविदास ने उन्हीं को अपना गुरु बना लिया। स्वामी रामानंद ने उन्हें रामभजन की आज्ञा दी व गुरुमंत्र दिया ''रं रामाय नम:''। गुरुजी के सान्निध्य में ही उन्होंने योग साधना और ईश्वरीय साक्षात्कार प्राप्त किया। उन्होंने वेद, पुराण आदि का समस्त ज्ञान प्राप्त कर लिया।

कहा जाता है कि भक्त रविदास का उद्धार करने के लिए भगवान स्वयं साधु वेश में उनकी झोपड़ी में आये थे। लेकिन उन्होंने उनके द्वारा दिये गये पारस पत्थर को स्वीकार नहीं किया।

पूर्णमासी पर्व अवसर पर एक पंडित जी अपने शिष्यों के साथ गंगा–स्नान के लिए जा रहे थे। मार्ग में पंडित जी का जूता गड़बड़ हो गया। वे रैदास (संत रविदास) के पास आए। रविदास जी उस समय अच्छे धवल वस्त्र टीका आदि लगाकर अपने काम में लगे हुए थे। पंडित जी को मन ही मन उनके प्रति द्वेष व घृणा

हुई कि काम यह और पहनावा पंडितों का। रविदास जी समझ तो सब गए लेकिन उन्होंने कहा कुछ नहीं।

क्योंकि वे गंगा स्नान को जा रहे थे। उन्होंने जूते ठीक किए और कहा कि गंगा स्नान के लिए मैं अवश्य चलता किन्तु एक व्यक्ति को जूते बनाकर आज ही देने का मैंने वचन दे रखा है। यदि मैं उसे आज जूते नहीं दे सका तो वचन भंग होगा।

गंगा स्नान के लिए जाने पर मन यहाँ लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा? मन जो काम करने के लिए अन्त:करण से तैयार हो वही काम करना उचित है। आप गंगा मैया को मेरा एक पैसा भेंट कर देना। लेकिन यह पैसा तभी देना जब वे स्वयं न लें।

इस बात पर सभी हँसने लगे, कहीं ऐसा भी होता है। काम जूते बनाने का और बातें पंडितों जैसी। पंडित जी वह पैसा अपने हाथ में रविदास जी के हाथ से नहीं लिया, बल्कि उसे धुलवाकर अलग जगह रखवाकर लिया। पंडित जी अपने-अपने शिष्यों के साथ गंगा स्नान चल दिए।

स्नान किया। उसी समय स्मरण हो आया कि उस जूते बनाने वाले ने एक पैसा दिया था, दान करने के लिए। उन्होंने गंगा में खड़े होकर कहा वैसा ही कहा जैसा रैदास जी ने कहा था। बताते हैं कि गंगा मैया ने एक हाथ निकाला और पैसा ले लिया।

सब आश्चर्य चकित कि ऐसा कैसे हो गया। तभी पंडित जी के हाथ में एक अमूल्य कंगन भी आ गया। अब तो और भी चमत्कार हो गया। घोषणा हुई कि इस कंगन को रविदास को दे देना।

लेकिन पंडित जी के मन में खोट आ गई, उन्होंने सोचा कि इस कंगन को मैं काशी नरेश को भेंट कर दूँगा तो राजा हमें पुरस्कार देंगे। पंडित जी ने वह कंगन जाकर राजा को दिया। राजा बहुत खुश हुए, उन्होंने वह कंगन रानी को दे दिया। रानी ने कहा कि मुझे ऐसा एक कंगन और चाहिए। राजा ने पंडित जी को कहा कि ऐसा कंगन जल्दी आ जाना चाहिए, नहीं तो कठोर दंड दिया जाएगा।

यह सुनते ही पंडित जी के प्राण सूखने लगे कि यह तो आफत गले पड़ गई। पंडित जी ने सब बातें सच-सच बता दीं। अब तो राजा की जिज्ञासा बढ़ गई कि ऐसे महान व्यक्ति के दर्शन किए जाएँ। राजा लाव लश्कर के साथ रविदास जी के पास आया।

उसने प्रणाम किया। जब रविदास जी ने देखा कि यह तो राजा खड़े हैं तो उन्होंने विनम्रता से कहा कि आपने मुझे वहीं बुलवा लिया होता। राजा ने आने का मंतव्य बताया। रविदास सब समझ गए। उन्होंने तुरंत गंगा माँ से प्रार्थना की "हे गंगा माँ! मैं सच्चा भक्त हूँ तो आज लाज रख लेना।" उन्होंने अपनी कठौती आगे की, और कुछ ही पल में कठौती में जलधारा प्रकट हुई। कठौती में वैसा ही एक कंगन आ गया। राजा और पंडित आदि सभी नतमस्तक हो गए।

तभी से कहा जाने लगा कि मन पवित्र है तो इसे कठौते के जल में ही गंगास्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है। कहा जाता है कि इस चमत्कार से ही

कहावत प्रचलित हो गयी कि– ''मन चंगा तो कठौती में गंगा।''

संत रविदास जी की महानता और भक्ति भावना की शक्ति के प्रमाण इनके जीवन के अनेक घटनाओं में मिलते हैं। जिसके कारण उस समय का सबसे शक्तिशाली राजा मुगल साम्राज्य का बाबर भी संत रविदास जी के प्रभाव से नतमस्तक था।

दिल्ली में उस समय सिकंदर लोदी का शासन था। उसने रविदास के विषय में काफी सुन रखा था। सिकंदर लोदी ने संत रविदास को मुसलमान बनाने के लिए दिल्ली बुलाया और उन्हें मुसलमान बनने के लिये बहुत सारे प्रलोभन दिये। संत रविदास ने काफी निर्भीक शब्दों में निंदा की।

भारतीय संतों ने सदा अहिंसा वृत्ति का ही पोषण किया है। उन्होंने कभी भी जन्मजाति के कारण अपने आपको हीन नहीं माना। उन्होंने परमार्थ साधना के लिये सत्संगति का महत्व भी स्वीकारा है। वे सत्संग की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि

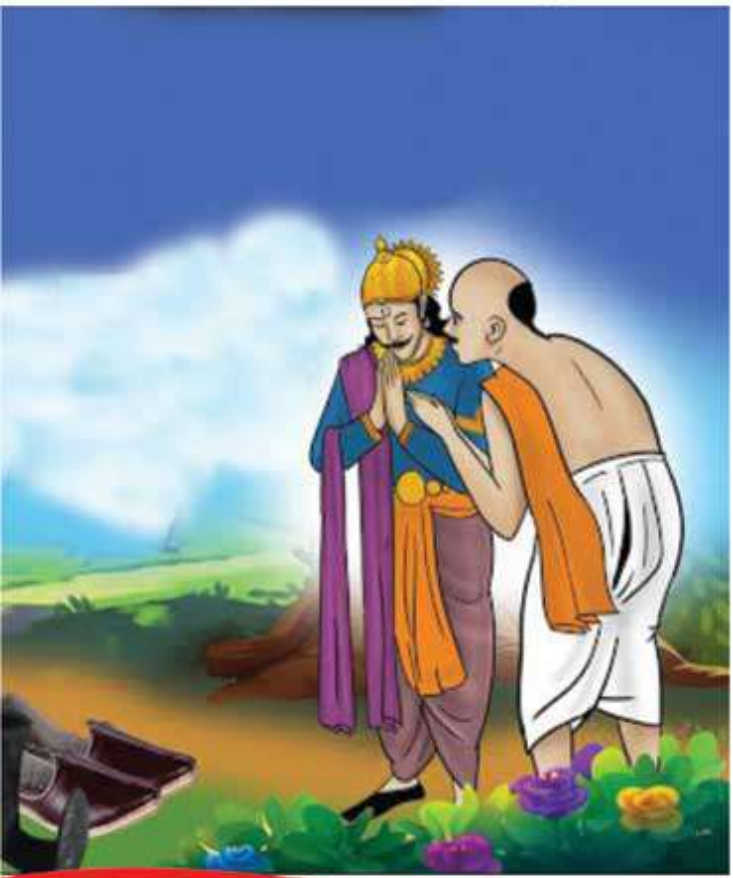

उनके आगमन से घर पवित्र हो जाता है। उन्होंने श्रम व कार्य के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की तथा कहा कि अपने जीविका कर्म के प्रति हीनता का भाव मन में नहीं लाना चाहिये। उनके अनुसार श्रम ईश्वर के समान ही पूजनीय है।

संत रविदास ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भारत भ्रमण करके समाज के उत्थान की नयी दिशा दी। संत रविदास साम्प्रदायिकता पर भी चोट करते हैं। उनका मत है कि सारा मानव वंश एक ही प्राण तत्व से जीवंत है। वे सामाजिक समरसता के प्रतीक महान संत थे। वे मदिरापान तथा नशे आदि के भी घोर विरोधी थे तथा इस पर उपदेश भी दिये हैं।

चित्तौड़ के राणा सांगा की पत्नी झाली रानी उनकी शिष्या बनीं वहीं चित्तौड़ में संत रविदास की छतरी बनी हुई है। मान्यता है कि वे वहीं से स्वर्गारोहण कर गये। समाज में सभी स्तर पर उन्हें सम्मान मिला। वे महान संत कबीर के गुरुभाई तथा मीरा के गुरु थे।

श्री गुरुग्रंथ साहिब में उनके पद भी संकलित है। आज के सामाजिक वातावरण में समरसता का संदेश देने के लिये संत रविदास का जीवन आज भी प्रेरक है।

एक बार गंगातट पर संत रविदास जी 'राम–राम' द्वारा भवसागर से पार हो जाने का उपदेश दे रहे थे। कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियों ने उनका अपमान करने हेतु बीच में टोककर कहा– ''महाराज! भवसागर से पार होने की बात तो दूर रही, इससे जरा एक पत्थर को तो नदी में तैराकर दिखाओ, आपकी बात की सच्चाई हम तभी मानेंगे।'' रविदास जी ने एक पत्थर की शिला उठाई और उस पर 'राम' लिखकर उसे नदी में छोड़ दिया। लोगों ने आश्चर्य चकित होकर देखा कि सचमुच ही शिला जल के ऊपर तैर रही थी।

ऐसे थे हमारे महान संत गुरु रविदास जी।

– मुरादाबाद
(उत्तर प्रदेश)

परंपरा और आधुनिकता के सेतु : जयप्रकाश भारती

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

३१ वर्षों तक नंदन जैसी लोकप्रिय पत्रिका के सम्पादक रहे जयप्रकाश भारती, बाल साहित्य के कुशल लेखक ही नहीं, भविष्यवेत्ता भी थे। उन्होंने कहा था, इक्कीसवीं सदी बाल साहित्य की होगी। उनका यह कथन सत्य सिद्ध हुआ। आज सर्वत्र बाल साहित्य की अनुगूंज है।

जयप्रकाश भारती का जन्म २ जनवरी १९३६ को मेरठ में हुआ। उनके पिता रघुनाथ सहाय तथा माता कमलादेवी थीं। वे मूलत: विज्ञान के विद्यार्थी थे। बाद में उन्होंने एम. ए. पत्रकारिता से किया। साक्षरता निकेतन लखनऊ से जीविका आरम्भ करने वाले भारती जी दिल्ली से प्रकाशित 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में विज्ञान संपादक भी रहे, फिर 'नंदन' के सम्पादक बने।

बाल साहित्य व उसकी आलोचना के क्षेत्र में भारती जी का विपुल अवदान है। उन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन और संपादन किया। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– हिमालय की पुकार, बर्फ की गुड़िया, रंग–रंग के फूल खिले, सपनों का देश, वंदे मातरम्, जलपरी, देश हमारा, झुनझुना सरदार भगतसिंह, विज्ञान की विभूतियाँ, चलो चांद पर चलें, हीरों का हार, लो गुब्बारे, भारत का प्रथम अंतरिक्ष यात्री, रंग–झिलमिल कथाएँ, मेरी प्रिय बालकहानियाँ, चाँद पर चहल–पहल, अंतरिक्ष कितना जाना–कितना अनजाना, अनंत आकाश, अथाह सागर, सच होते सपने, बिजली रानी की कहानी, अनजान से पहचान, अपने–अपने आइने, रुनझुन रुनझुन, ग्रामीण जीवन में विज्ञान, वे तो बने सितारे, युवकों का उद्घोष, वन्देमातरम्, विज्ञान गीत आदि। भारतीजी द्वारा सम्पादित पुस्तकों में प्रमुख हैं– प्राचीन कथा कोश, हिन्दी के श्रेष्ठ बालगीत, भारत की प्रतिनिधि लोक कथाएँ, हिन्दी की श्रेष्ठ बालकथाएँ, जूनियर इन्साइक्लोपीडिया, हिन्दी की सौ श्रेष्ठ पुस्तकें, हू इज हू इन चिल्ड्रेन लिटरेचर, भारतीय बालसाहित्य का इतिहास।

बाल पत्रकारिता स्वर्ण युग की ओर, बालसाहित्य इक्कीसवी सदी में, कम्प्यूटर क्रांति और बालक उनकी गहन अध्ययन और चिंतन से अनुप्रमाणित पुस्तकें हैं।

भारतीजी परम्परा और आधुनिकता के समन्वय के पक्षधर थे। उनके शब्दों में क्या अपनी धरती से कट जाना ही आधुनिकता है? आधुनिकता पुराने को पूरी तरह त्याग देने में नहीं होती। हाँ, नित नूतन बने रहने में होती है। उनकी इच्छा थी कि बाल–विश्वविद्यालय की स्थापना होनी चाहिए जिससे बालक को लेकर स्वतंत्र रूप से चिंतन का परिवेश बन सके। काश! इस दिशा में कार्य हो सके तो यह भावी राष्ट्र निर्माण की दिशा में उल्लेखनीय पहल होगी।

५ फरवरी २००५ को दिल्ली में उनका देहांत हो गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ रोचक रचनाएँ–

माई के लड्डू

ठुम्मक ठुम्मक ठुम्मक ठुम्मक। ऊँटगाड़ी दिल्ली की ओर चली जा रही थी। आधी रात का समय। ऊँटगाड़ी की सवारियाँ सोई हुई थीं। कोई ऊँघ रहा था, तो कोई सपना देख रहा था। अचानक गाड़ी रुकी। कुछ शोर-सा हुआ। अच्छा तो लुटेरों ने गाड़ी रुकवा ली थी। जगमल और उसके दो साथी मोटे-मोटे लट्ठ लिये हुए थे। उन्होंने गाड़ीवान के मुँह में कपड़ा ठूँसा। पाँव बाँधे और बसा सभी से बोले- ''जगमल का नाम सुना है? किसी की जान नहीं लेता, पर जो कुछ जिसके पास है, निकाल दो वरना तालाब में डाल देंगे।''

लोगों को पता था कि ये जो कह रहे हैं, वैसा ही होता है। इस जंगल में उनकी गुहार भला कौन सुनेगा? उन्होंने नकदी निकाल-निकालकर दे दी। पर तीन बालक अभी भी पड़े ऊँघ रहे थे। चोरों ने उन्हें झिंझोड़ा। कड़ककर कहा- ''अबे! तुम्हारे पास क्या है? घोड़े बेचकर सो रहे हो।''

किशोर उग्र के तीन बालक आँखें मलते उठ बैठे। उनकी समझ में आ गया कि लुटेरों ने ऊँटगाड़ी को रोका है। छोटे दो तो रोने लगे। पर लुटेरे कहाँ पसीजने वाले थे। तीनों बच्चों के पास छोटी-छोटी पोटलियाँ थीं। माँ ने थोड़े-थोड़े लड्डू बाँध दिए थे। वे पोटलियाँ उनसे झटककर जगमल और उसके दो लुटेरे साथी अँधेरे में गायब हो गए।

गाड़ीवान के बँधे पाँव खोले गए। मुँह से कपड़ा हटाया गया। तब कहीं ऊँटगाड़ी आगे बढ़ सकी। फिर वही पहले की तरह ठुम्मक ठुम्मक।

आधा-पौन घंटा बीता होगा। अपने साथियों के साथ जगमल फिर आ धमका।

''अरे दइया रे! आज किसका मुँह देखा था।'' पर नहीं, इस बार लुटेरों ने किसी को तंग नहीं किया, न किसी से कुछ माँग की।

वे बोले- ''अबे छोकरो! लो अपने लड्डू लो। खाना मजे से। कभी किसी का माल तो हम लौटाते नहीं, पर तुम पर दया कर रहे हैं।''

हुआ यों कि जंगल में एक पुराने मंदिर के पास बैठकर वे बँटवारा करने लगे। उन्हीं बच्चों से छीनी पोटलियाँ खोलीं, लड्डू खाने लगे। तीन लुटेरों ने अलग-अलग पोटलियों से लड्डू निकाले। हर पोटली के एक लड्डू में से चाँदी का एक-एक रुपया निकला। उन्होंने सोचा, ''सारे लड्डुओं में रुपये होंगे।'' लेकिन यह उनका भ्रम था। केवल तीन लड्डुओं में ही तीन रुपये मिले।

जगमल बोला- ''अरे! इन छोकरों की माई ने चाँदी का रुपया लाडू में रखा होगा कि दिल्ली पहुँचकर दु:ख-सुख में काम आ जाए। यह तो अमानत के रुपये हुए। लौटाओ इन्हें, नहीं तो ये हम पर भारी पड़ेंगे।'' बस, लुटेरे उल्टे पाँव लौट पड़े। उन्होंने ऊँटगाड़ी में आँसू बहाते बच्चों को उनकी पोटलियाँ लौटाई और यह जा, वह जा।''

पुराने जमाने में रेलें तो थीं नहीं। मेरठ से ऊँट गाड़ियाँ चलती थीं। शाम को चलती और रात-भर चलते-चलते सुबह तक दिल्ली पहुँच जातीं। उस रात छबील और उसके दो छोटे भाई दिल्ली के लिए खाना होने लगे। उनकी माँ ने थोड़े से लड्डू बना दिए थे। उस बेचारी के पास जो जमा-पूँजी थी, उसमें से छबील को कुछ दे दिया। फिर बोली, ''लो ये लड्डू, भूख लगे तो खा लेना। पर अपनी-अपनी पोटली के लड्डू खुद ही खाना। एक-दूसरे से बदलना मत।''

माँ ने लड्डुओं की तीन पोटलियाँ बनाई और हर पोटली के अन्दर एक लड्डू में एक रुपया रख दिया। उन दिनों मंदा जमाना था। एक रुपये में भी काफी सामान आ जाता था। उसने सोचा, 'क्या पता, दूसरी जगह काम-धंधा मिले या नहीं। थोड़ा सहारा हो जाएगा।' बच्चों को इस बारे में कुछ भी पता न था।

ऊँटगाड़ी दिल्ली आ लगी। छबील अपने भाइयों ने साथ चाँदनी चौक आया। पास ही गली में पुराना राम मंदिर था। वहीं नहाए-धोए। कुछ खाया-पीया। मंदिर में शीश नवाया और फिर चले काम की खोज में। उन्हें खास भटकना नहीं पड़ा। उसके दोनों भाई कपड़े की दुकानों में छोटे-मोटे काम पा गए। छबील फिर वहीं मंदिर के चबूतरे पर आ बैठा। मंदिर के पुजारी से उसने बातचीत की। एक छोटी कोठरी रहने को मिल गई।

अचानक छबील को न जाने क्या सूझा घर में माँ को लड्डू बनाते वह देखा करता था। उसने कुछ लाई खरीदी, गुड़ खरीदा और लड्डू बनाए। रामजी को उन लाई के लड्डुओं का भोग लगाया। एक थाल में लड्डू सजाकर बेचने लगा। लड्डुओं की अच्छी बिक्री हुई। बस, वह यही धंधा करने लगा। चाँदनी चौक में दूर-पास व्यापारी तो बहुत आते ही थे। वे लड्डू खरीद लेते। खाते तो खाते ही जाते। छबीलराम कटरों-गलियों में आवाज लगाया करता, ''माई के लाडू, लाई के लाडू।''

उसका काम चल निकला। तीन महीने में ही उसने काफी रकम जमा कर ली। शुरु में एक थाल भर लड्डू ही बिकते थे। अब तो तीन थाल भर लड्डू बिकने लगे। फिर तो उसने लकड़ी का ठेला खरीद लिया। इस पर लड्डू सजाकर बेचने लगा। हाँ, जब भी लड्डू की नई खेत तैयार करता, तो रामजी को भोग लगाना न भूलता।

तीन वर्ष बीतते-बीतते छबीले हलवाई बन गया। उसकी छोटी-सी दुकान भी एक कटरे में हो गई। अब वह लाई के अलावा कई तरह के और लड्डू भी बनाने लगा। बिक्री दिनोंदिन बढ़ती ही गई।

छबील मेरठ से अपनी माँ को दिल्ली ले आया। उसने अपने दोनों भाइयों को दुकानें खुलवा दीं। बड़े होने पर उनके ब्याह भी कर दिए। परिवार सुख से रहने लगा।

एक दिन लाला छबीलराम दुकान पर बैठे थे। अब कई नौकर-चाकर और कारीगर उन्होंने रख लिए थे। उस दिन एक ग्राहक आया-बड़ी-बड़ी मूँछें, सिर पर साफा बाँधे हुए। लड्डू खरीदे और वहीं बैठकर खाने लगा। तभी छबीले को जैसे कुछ याद हो आया। वह चेहरा कुछ पहचाना-सा लगा। उन्होंने मन इधर-उधर लगाना चाहा, पर रह-रहकर छबील उस ग्राहक को ही देखने लगते। आखिर उन्होंने पूछ ही लिया, ''कहाँ से आए हो, चौधरी?''

''अरे लाला! मैं बेगमाबाद का हूँ, जगमल मेरा नाम है।'' ग्राहक बोला। ऊँटगाड़ी की वह यात्रा और उस रात की घटना-सब-कुछ जैसे छबील को याद हो आया। पर मूँछों वाले उस ग्राहक से उसने कुछ नहीं कहा। लड्डू खाने और पानी पीने के बाद जगमल पैसे

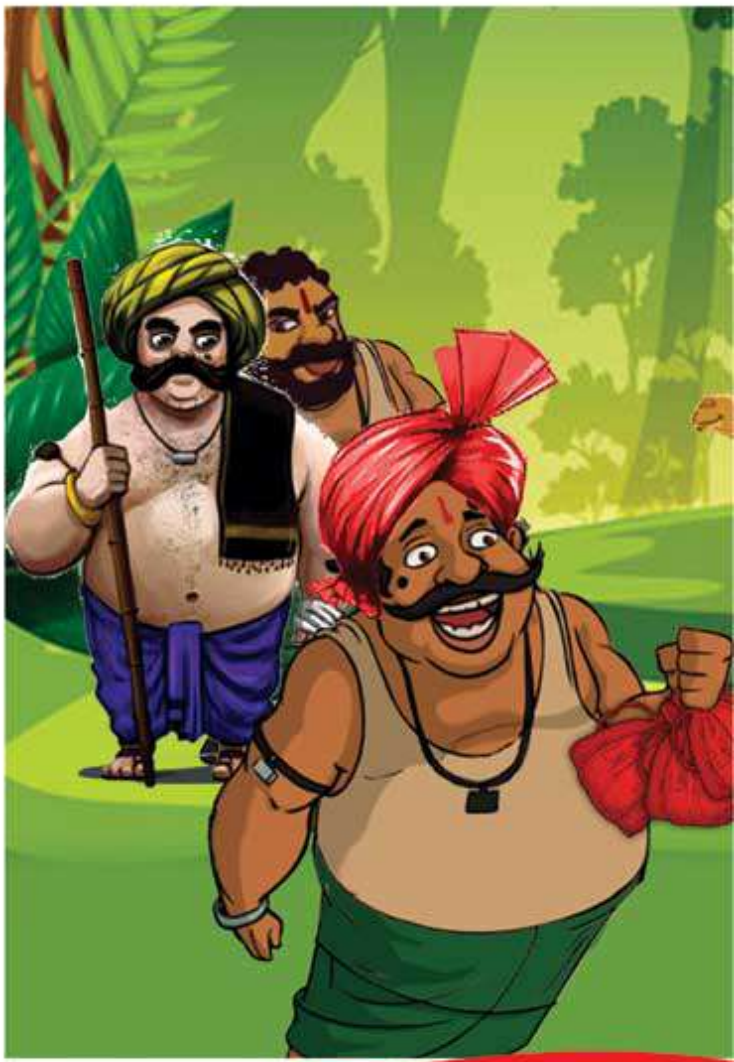

देने लगा, तो छबील ने मना कर दिया। जगमल बोला– ''लालाजी! मैं मुफ्त में किसी का माल नहीं खाता। पैसे तो लेने ही पड़ेंगे।''

छबीलराम बोले– ''मैं मुफ्त में किसी का माल नहीं खाता। पैसे तो लेने ही पड़ेंगे।''

छबीलराम बोले, ''भाई! तुम मुझे नहीं पहचानोगे, पर मैंने तुम्हें पहचान लिया। तुम उस रात ऊँटगाड़ी में चाँदी के रुपए न लौटते, तो मैं यह धंधा शुरु कैसे करता?'' जगमल की आँखें गीली हो गई। वह बोला, ''लाला! मुझे शर्मिंदा न करो। मन पलट गया और उस दिन के बाद से मैंने वह धंधा ही छोड़ दिया। लो, अपने पैसे लो।'' उसने छबीलराम को पैसे दिए और कुछ सोचता हुआ–सा झटपट वहाँ से चला गया। लाला ने उसके दिए पैसे मंदिर में चढ़ा दिए।

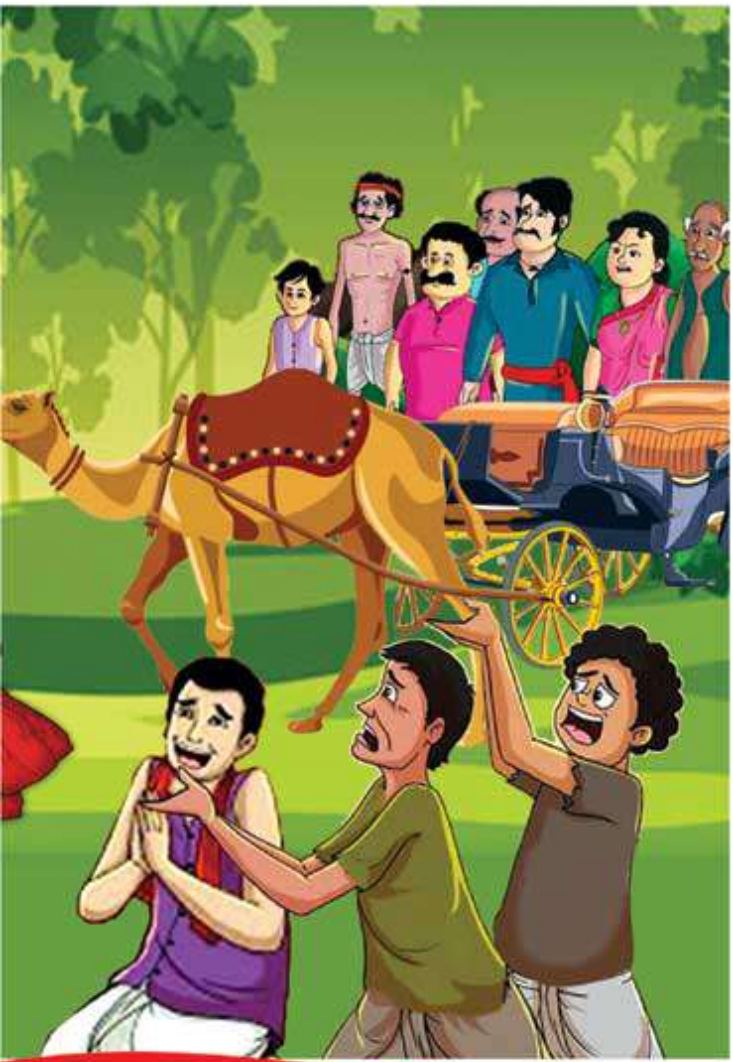

दिल्ली की बिल्ली

दिल्ली से इक बिल्ली आई,
बिल्ली क्या मरगिल्ली आई।
मैंने पूछा– 'बिल्ली ताई!
खाओगी तुम दूध–मलाई?'
खाकर दूध–मलाई भाई–
वह तो करने लगी लड़ाई।
करती फिरती म्याऊँ–म्याऊँ,
अभी भूख है, अब क्या खाऊँ?

गुलाब

है गुलाब फूलों का राजा,
जब देखो तब लगता ताज़ा।
तोड़ोगे यदि तुम यह फूल,
झट से चुभ जाएगा शूल।
भारत से यह गया विदेश,
रंग भी बदले, बदला वेश।
बीज न इसके होते हैं,
कलम लगाकर बोते हैं।

राजा–रानी

एक था राजा एक थी रानी,
दोनों करते थे मनमानी।
राजा का तो पेट बड़ा था,
रानी का भी पेट घड़ा था।
दोनों खाते, छक–छक कर,
फिर सो जाते, थक–थक कर।
काम यही था बक–बक, बक–बक,
नौकर से बस झक–झक, झक–झक।

पहेली

बसा पेट में एक नगर,
नहीं नगर में रहूँ मगर।
सदा तैरता हूँ जल पर,
मगर न कहना मुझे मगर। (जहाज)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

परी

– राजीव सक्सेना

''माँ! मुझे एन्ड्रॉइड फोन चाहिए जिसमें डेढ़ सौ जी. बी. मेमोरी हो, बारह जी. बी. रैम हो।''

तान्या ने शाला से आते ही तानाशाही अन्दाज में अपनी माँ को आदेश सुना दिया।

''क.... क..... क्या कहा तुमने?'' माँ ने आश्चर्य भरे स्वर में में लगभग हकलाते हुए पूछा।

तान्या श्रीधर!

हाँ, यही तान्या का पूरा नाम था। लगभग आठ–नौ वर्ष की तान्या बचपन से ही बड़ी तेज–तर्रार और होशियार लड़की थी। वह अपने मित्रों के बीच बहुत लोकप्रिय थी।

तान्या को बचपन से ही तकनीक से बड़ा लगाव था। मोबाइल, कम्प्यूटर और रोबोटों की उसे बड़ी अच्छी जानकारी थी। बाजार में कोई भी नया गैजेट, कम्प्यूटर या रोबोटों का नया मॉडल (प्रादर्श) लाँच होता तो उसे सबसे पहले इसकी जानकारी प्राप्त हो जाती।

यही कारण था कि तान्या के हम उम्र दोस्त कोई भी नया गैजेट खरीदने से पहले तान्या की सलाह अवश्य लेते। तान्या अपने मित्रों के लिए नि:शुल्क सलाहकार बन गयी थी।

उस दिन जब तान्या ने माँ से एन्ड्रॉइड मोबाइल खरीदने की फरमाइश की तो उन्होंने आँखें विस्फारित करते हुए उससे पूछा– ''तान्या! तुम अभी बहुत छोटी हो। भला, अभी से एन्ड्रॉइड मोबाइल का क्या करोगी?''

''माँ! साईंस पढ़ाने वाली दीदी ने बोला है कि अब ऑनलाईन पढ़ाई भी की जायेगी। घर के लिए ऑनलाईन होमवर्क दिया जायेगा। इसके लिए एन्ड्रॉइड मोबाइल तो होना ही चाहिए न...।''

तान्या का तर्क अपनी जगह ठीक था।

''मैं तुम्हारे पिताजी से बात करूँगी। तुम्हें एन्ड्रॉइड फोन मिल जाएगा।'' माँ ने आश्वस्त किया।

''लेकिन माँ! ध्यान रहे कि मुझे ए. आई. (आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स) वाला ही मोबाइल चाहिए। जिससे मैं तरह–तरह के प्रश्न पूछ सकूँ, जो होमवर्क निपटाने में मेरी सहायता कर सके।''

''ठीक है।''

पिताजी ने जल्दी ही तान्या के लिए एक अच्छा–सा मोबाइल खरीद दिया।

''पिताजी! इस मोबाइल से मेरा काम नहीं चल रहा।'' तान्या ने कुछ ही दिनों बाद घोषणा करने वाले अंदाज में कहा।

''क्यों? इस मोबाइल में भला क्या खराबी है?''

''इसकी ए. आई. यानि कृत्रिम बुद्धिमत्ता बहुत

ही पिछड़ी हुई और कमजोर है। वह मेरे शब्दों या उनके उच्चारण को ठीक-ठीक नहीं समझ पाती है।''

''तो उसमें हम क्या करें?'' पिताजी ने कहा।

''आप मुझे एलेक्सा या सीरी जैसी उन्नत तकनीक वाली ए. आई. या उस जैसी कोई होम डिवाइस खरीदकर दीजिए।'' तान्या ने अन्ततः अपनी फरमाइश कर ही दी।

''हे भगवान! यह लड़की है या आफत!'' कुछ क्षणों के लिए तो पिता जी भी अपना सिर पकड़कर बैठ गये। उन्नत तकनीक वाली ए. आई. या फिर होम डिवाइस कोई सस्ती वस्तु नहीं थी।

लेकिन पिताजी ने भी अपनी प्यारी बिटिया को मना करना तो सीखा ही नहीं था।

''ठीक है! ला देंगे।'' पिताजी ने बस इतना ही कहा।

तान्या के लिए पिता जी ने ए. आई. एलेक्सा लाकर दे दी।

अब तो तान्या की पौ-बारह हो गई। जब देखो तब वह अपने कमरे में एलेक्सा से बतियाती रहती। तान्या के कमरे में बस उसकी या फिर ए. आई. एलेक्सा की आवाज गूँजती रहती।

अब तान्या के पास माँ-पिताजी से बोलने-बतियाने का भी समय नहीं था। हाँ, उसे कोई फरमाइश करनी होती थी या फिर माँ-पिताजी से कोई काम कराना होता था तब अवश्य वह उनसे बात कर लेती थी।

लेकिन अब एलेक्सा से भी तान्या का मन ऊबने लगा था। एलेक्सा तान्या के लगभग सभी प्रश्नों का उत्तर अवश्य दे देती थी। होमवर्क निपटाने और टी. वी. ऑन-ऑफ करने, लाइट धीमी करने या बुझाने, पंखा-कूलर या फिर ए. सी. चालू करने जैसे काम अवश्य कर देती थी किन्तु तान्या के लिए बढ़िया नाश्ता-भोजन तैयार करने और रात को लोरी सुनाते हुए सिर सहलाने का काम तो एलेक्सा नहीं कर सकती थी।

इन दिनों बाजार में बच्चों के लिए एक नया रोबो लाँच हुआ था। बच्चों जैसे शक्ल वाला क्यूट किस्म का यह रोबो बच्चों के सभी छोटे-बड़े काम बहुत ही सफाई के साथ कर सकता था।

चतुर तान्या को इस नये रोबो की जानकारी मिल गयी।

बस, उसने फिर माँ-पिताजी के सामने अपनी फरमाइश रख दी- ''एलेक्सा, मेरी अधिक सहायता नहीं कर पाती है। मुझे 'बूबी' चाहिए।''

''बूबी?''

''हो, बूबी बाजार में बिक्री के लिए आया नया रोबो है। यह बच्चों को अच्छी तरह समझता है। उनके काम ढ़ंग से करता है।''

पिताजी भला कैसे मना करते? तान्या उनकी लाड़ली बिटिया जो ठहरी।

पिताजी ने झटपट 'बूबी' के लिए ऑनलाईन खरीद का ऑर्डर दे दिया।

आखिर 'बूबी' भी तान्या के घर आ गया। घर में बूबी को देखकर तान्या की खुशी का ठिकाना न रहा। अब उसकी सारी मुश्किलें जो आसान होने वाली थीं।

अब तान्या का अधिकतर समय बूबी के साथ व्यतीत होने लगा। बूबी तान्या का अच्छा दोस्त सिद्ध हो रहा था। वह न केवल तान्या के सारे छोटे-मोटे काम कर देता था बल्कि उसके साथ वीडियो गेम भी खेल लेता था।

तान्या को माँ-पिताजी की कोई विशेष आवश्यकता नहीं रह गयी थी। अब उसके पास एलेक्सा, बूबी और नयी कम्प्यूटर तकनीक से काम करने वाला वी. आर. (वर्चुअल रियलिटी) हेंडसेट जो था।

इन उपकरणों के सहारे तान्या दिन या सप्ताह तो क्या महीने गुजार सकती थी।

धीरे-धीरे तान्या एकाकी होने लगी।

माँ जब भी चुपचाप तान्या के कमरे में झाँकती वह एकलेक्स से बोलती या फिर बूबी से बतियाती नजर आती। उसके चेहरे पर अक्सर वी. आर. हेंडसेट लगा होता और खाने के लिए बार-बार पुकारने पर भी वह माँ-पिताजी को कोई जवाब न देती जैसे अपनी बनायी किसी दुनिया में खो गयी हो।

अब तान्या भली, उसकी एलेक्सा भली या फिर बूबी भला।

इधर कुछ दिनों से तान्या के पिताजी उदास रहने लगे थे। किसी काम में उनका मन नहीं लगता था। वे अपने कार्यालय भी नहीं जा रहे थे। न ढंग से खाते थे, न सोते थे।

तान्या की माँ के कुछ पूछनें पर बस 'हाँ-हूँ' में संक्षिप्त जवाब देते थे और अक्सर गुमसुम रहते थे।

हमेशा प्रसन्न दिखायी पड़ने वाले तान्या के पिताजी के व्यवहार में एकाएक आया यह परिवर्तन सचमुच चौंकाने वाला था।

तान्या की माँ को चिन्ता हुई तो वे उन्हें डॉक्टर के पास ले गयीं। बहुत सारी जाँच करने के बाद भी डॉक्टर तान्या के पिताजी की बीमारी का असली कारण न जान सके।

वे बोले- ''वैसे तो इन्हें कोई बीमारी नहीं है, अच्छा होगा आप किसी मनोचिकित्सक से परामर्श करें।''

मनोचिकित्सक ने तुरन्त उनकी बीमारी का कारण जान लिया। मनोचिकित्सक ने कहा- ''इन्हें डिप्रेशन (अवसाद) हुआ है।''

''डिप्रेशन ? लेकिन क्यों ?''

''इन्हें अपनी बेटी तान्या से बात करने का अवसर नहीं मिल पा रहा है। देखिए, श्रीमती श्रीधर! बच्चे बड़ों के लिए दवा का काम करते हैं... उनके साथ हँसना-खेलना या बोलना उत्साह और ऊर्जा देता है, जिन्दगी जीने का एक कारण भी।'' मनोचिकित्सक ने कहा।

''अब ठीक कैसे होंगे ?''

''तान्या ही इनका सही इलाज है। अगर तान्या इन्हें समय देगी तो जल्दी ठीक हो जायेंगे।''

लेकिन तान्या थी कि उसे पिताजी तो क्या माँ की भी कोई चिन्ता नहीं थी।

एक दिन तान्या ने बूबी को फरमान सुनाया- ''मेरे लिए फ्रिज से स्ट्राबेरी लाओ।''

आज्ञाकारी सेवक की तरह बूबी तुरन्त फ्रिज से ढ़ेर सारी स्ट्राबेरी निकालकर ट्रे में ले आया। स्ट्राबेरी देखते ही तान्या भड़क गयी- ''तुम बुद्धू हो बूबी। मैं भला इतनी ढ़ेर सारी स्ट्राबेरी कैसे खा सकती हूँ और वो भी सड़ी हुई। तुम्हें पता नहीं कि फ्रिज में हफ्तों से रखी स्ट्राबेरी सड़ चुकी हैं और खाने लायक नहीं है। फिर स्ट्राबेरी भी ट्रे में कैसे बिखरी-बिखरी रखी हैं। तुम्हें देने का शिष्टाचार भी नहीं आता।''

बेचारा बूबी! काफी बुद्धिमान रोबोट अवश्य था किन्तु वह माँ–पिताजी जितना समझदार तो हो नहीं सकता था। आखिर एक मशीन जो ठहरा। वह 'शिष्टाचार' क्या जानता?

तभी तान्या को माँ की याद आयी।

''माँ! बहुत दिन हो गये हैं। कृपया आज मेरे लिए आलू–प्याज की पकौड़ियों बना दो।''

हमेशा पिज्जा–पास्ता या नूडल्स खाने वाली तान्या आज अचानक पकौड़ियों की फरमाइश कर रही थी। माँ आश्चर्य से उसे देखने लगीं।

अब उसने एलेक्सा को फरमान सुनाया– ''एलेक्सा! मुझे कोई लोरी और मजेदार कहानी सुनाओ।''

एलेक्सा ने अपनी मशीनी आवाज में लोरी सुनानी शुरू की।

''फिर वही सुनी–सुनायी घिसी–पिटी लोरी जिसे तुम सैकड़ों बार मुझे सुना चुकी हो। बंद करो यह लोरी...।'' तान्या एकदम एलेक्सा पर भड़क गयी।

बेचारी एलेक्सा! एकदम खामोश हो गयी। तान्या अपने आपसे बड़बड़ाती हुई बोली– ''ये मशीनें एकदम बकवास हैं। चाहे एलेक्सा हो या बूबी– सब मूर्ख हैं। मेरे माँ–पिताजी ही अच्छे हैं, मुझे अच्छी तरह समझते हैं।''

तभी तान्या को अपने पिताजी की याद आयी। ''पिताजी! पिताजी!! आप किधर हो? बहुत दिन हो गये हैं, आज मैं आपसे एक कहानी सुनूँगी। कोई नयी–मजेदार कहानी।''

पिताजी तो जैसे तान्या की आवाज सुनने को आतुर ही बैठे थे।

तकिये पर सिर टिकाये बेड पर आराम की मुद्रा में लेटी तान्या को पिताजी ने कहानी सुनानी शुरू की– ''एक थी नन्हीं परी! उसका नाम था... तान्या।''

तान्या के चेहरे पर कहानी की पहली पँक्ति सुनते ही एक भोली–शरारती मुस्कान बिखर गयी।

उधर पिताजी का सारा अवसाद भी एकदम 'उड़न–छू' हो गया।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

आदरणीय भाई साहब, सादर नमस्कार।

अहिल्याबाई होलकर पर केन्द्रित विषय सामग्री अत्यधिक रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है।

हमारे भारतवर्ष की सीधी–सरल, आडंबर रहित, कृषि प्रधान संस्कृति का जो मनोरम चित्रण इस चित्रकथा के द्वारा किया गया है, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। देवी अहिल्याबाई के संबंध में मेरी जानकारी अत्यंत सीमित थी परन्तु देवपुत्र के इस स्तुत्य प्रयास के फलस्वरूप न केवल उनके गौरवशाली जीवन के विषय में मेरी जानकारी में वृद्धि हुई अपितु मेरी पुत्री जो कि एमबीबीएस की छात्रा है उसके भी ज्ञान कोष और संस्कारों में गुणातीत वृद्धि हुई। यही कारण है कि देवपुत्र के प्रत्येक अंक की न केवल मुझे अपितु हमारे पूरे परिवार को अधीरता से प्रतीक्षा रहती है।

– मनीषा बनर्जी, नागपुर (महाराष्ट्र)

छोटी कहानी

चन्द्रमा और चंद्रयान

– आस्था कौरव

चंद्रयान ने चन्द्रमा के दरवाजे को खटखटाना शुरु कर दिया है। अब जैसे ही चन्द्रमा दरवाजा खोलेगा चंद्रयान किसी बिना बुलाए मेहमान की तरह चन्द्रमा को अपना घर समझकर घुस जायेगा।

जो चन्द्रमा अभी तक बेफिक्र होकर रोज–रोज किसी कवि की कविताओं में घुस जाता है। कभी किसी युवक के सपने में। उसको पता नहीं है कि उसकी जासूसी के लिए एक उसका रिश्तेदार दरवाजे पर खड़ा होकर उसे पुकार रहा है।

मैंने कल रात सपने में चन्द्रमा की बातचीत सुनी। चंद्रयान ने चन्द्रमा के पहले खूब चक्कर लगाए जैसे चुनाव से पहले नेता मतदाता के लगाता है। फिर विधानसभा कि क्लास में स्थापित होकर बैठ जाता है।

चंद्रयान की जोर–जोर से आवाज लगाने पर चन्द्रमा ने दरवाजा खोला चन्द्रमा ने कहा ''भैया! आप कौन?'' चंद्रयान ने कहा ''मामा! पहचाना नहीं.... मैं चंद्रयान हूँ।'' ''यहाँ क्यों आये हो?'' चन्द्रमा ने जीते हुए नेता की तरह रूखे भाव से कहा।

चंद्रयान ने कहा ''यह देखने के लिए कि आप कैसे हो।'' चन्द्रमा हंस कर बोला, ''अरे! इसके लिए यहाँ आने की आवश्यकता ही नहीं थी। बस आप किसी भी हिंदी कवि से पूछ लेते, आपको समझ आ जाता कि मैं कितना सुंदर हूँ।''

चंद्रयान ने कहा..... मामा! आप समझ नहीं पा रहे हैं। आप नील आर्मस्ट्रॉंग के जमाने से बाहर निकलो। वह आपको जब बताकर गया था तब से अब तक जमाना बहुत बदल गया है। अब कवि अपनी कविता में चन्द्रमा को रोटी लिखता है।

चंद्रयान कहता है मामा आपकी जमीन पर तो गड्ढे ही गड्ढे हैं, मुझे तो यह लगा ही नहीं कि मैं चाँद पर हूँ। मुझे लगा कि बारिश के बाद भारत की किसी सड़क पर चल रहा हूँ। क्या आपके यहाँ भी इंजीनियर कमीशन खाते हैं? चन्द्रमा बोला– ये बकवास बंद करो मैं तो हमेशा से ही ऐसा हूँ।

चन्द्रमा ने पूछा ये बताओ, कि तुम यहाँ कितने दिन रुकोगे? ये अपने देश की जमीन मत समझ लेना कि कोई भी कहीं से भी आकर घुस जाता है, फिर वह पहचान–पत्र बनवा लेता है, कुछ दिन बात कहता है कि ये किसी के बाप का हिन्दुस्थान नहीं है। ये शरणार्थी से मालिक वाला सिस्टम नहीं चलेगा।

चंद्रयान ने कहा– ''मामा! ये तो मेरे भेजने वाले ही जाने, मैं यहाँ कितने दिन रुकूँगा। लेकिन यह बात सच है कि मैं यहाँ कब्जा नहीं करूँगा। चन्द्रमा ने कहा ''पहले ये बताओ कि तुम मुझे मामा–मामा क्यों

कह रहे हो ?'' चंद्रयान ने कहा।

''अरे! आप हमारी धरती माता के भाई हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर मेरी एंट्री हुई है। तो मैं तो मामा ही कहूँगा।'' चन्द्रमा ने कहा ''अच्छा ठीक है। लेकिन अब अधिक रिश्तेदारी मत निकालो।'' चंद्रयान ने पानी पीकर बोतल वहीं फेंक दी। चन्द्रमा ने कहा।

''तुम लोगों को तुम्हारी स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष में भी यह समझ नहीं आया कि कचरा कहाँ फेंकना है ?'' चन्द्रमा से चंद्रयान कहता है कि ''मामा आप अकेले यहाँ रहते हो आपको नहीं लगता कि ये मानव भी आपके साथ रहे।''

चन्द्रमा ने कहा ''नहीं, तुम धरती पर रहकर उसके साथ कैसा व्यवहार करते हो धरती को खोदकर खोखला कर दिया। नदियाँ समाप्त कर दी। हिमालय पर कचरे के ढेर लगा दिए। समुद्र को विषैला कर दिया, हवा, पानी कुछ भी तो नहीं छोड़ा। अब तुम्हारी दृष्टि मुझ पर तो कहीं मंगल ग्रह पर। तुम्हारे लोग यह कहते फिरते हैं, चंदा-तारे तोड़ लाऊँगा ये तोड़-फोड़ से डर के कारण मैं तुम लोगों से दूर रहता हूँ। मुझे शांति से रहने दो। मुझे जीतकर क्या करोगे। मनुष्य की दूसरों के घर में ताँक-झाँक की आदत बहुत खराब है।

चंद्रयान ने कहा, ''मामा! आपके साथ एक फोटो (सेल्फी) निकाल लूँ क्या ? चन्द्रमा ने कहा ''क्या करोगे सेल्फी लेकर ?'' चंद्रयान ने कहा, ''मैं धरतीवासियों को दिखाऊँगा कि देखो चन्द्रमा तो गड्ढों वाली सड़क है। तुम्हारे किसी भी रिश्तेदार की शक्ल चन्द्रमा जैसी नहीं है। अब फालतू में ऐसी कविताओं से किसी को मूर्ख मत बनाना। किसी के मुख की तुलना चन्द्रमा से मत करना।''

– आलमपुर
(म. प्र.)

शिशु गीत

छोटा अन्ने

– चंद्रदत्त 'इन्दु'

छोटा अन्ने, मीठे गन्ने,
बड़े मजे से खाता।

कोई उससे गन्ना माँगे,
उसको जीभ चिढ़ाता।

मम्मी बोली- अन्ने बेटा!
मुझको दे दो गन्ने।

ये कहते हैं तुम मत खाओ,
झट से बोला अन्ने।

–

भाग नहीं पाओगे तुम

– रजनीकांत शुक्ल

पनवेल देश के महाराष्ट्र राज्य के रायगढ़ जिले में स्थित एक शानदार नगर है। इसे कोंकण प्रादेशिक क्षेत्र का प्रवेशद्वार भी माना जाता है। इसकी सीमा नवी मुंबई से लगी हुई है। यह मुंबई पूना मार्ग पर है और यहाँ से मुंबई की दूरी केवल इक्कीस किलोमीटर की है।

इसी पनवेल की मिडिल क्लास सोसाइटी के फ्लैट नंबर–१३ में राजीव भटकर रहते थे। उन्होंने अपने घर का नाम मातृ–पितृ छाया बंगला रखा हुआ था। यह वर्ष १९९९ की बात है। तब उनका बेटा लौकिक मात्र तेरह वर्ष का था।

वह सितम्बर महीने की छः तारीख की सुबह थी। शाम को घर के सभी लोग आराम से खा–पीकर सोए थे। उस समय पूरे घर में राजीव भटकर उनकी पत्नी और लौकिक सहित कुल तीन लोग ही थे। सुबह के उस समय लगभग चार बजे होंगे कि अचानक लौकिक की नींद खुल गई। वह कुछ देर तो आलस किए पड़ा सोचता रहा फिर वह लघुशंका के लिए अपने बिस्तर से उठ बैठा।

उसने अपने पैरों में चप्पल डाले और फिर बाथरूम की ओर बढ़ गया। वह बाथरूम से लौटकर आया तो यकायक उसकी दृष्टि अपने घर के पिछले दरवाजे की ओर चली गई।

उसने देखा– अरे घर के पीछे का दरवाजा तो खुला हुआ है? शायद माँ जी के ध्यान से उतर गया और यह दरवाजा खुला हुआ छूट गया। देखो कितनी बड़ी भूल हो गई। अब कल से मैं स्वयं ही ध्यान से दरवाजे को बंद कर दिया करूँगा। माँ के ऊपर नहीं छोड़ूँगा। घर के कामों की वजह से उनसे यह काम छूट जाता है। यही सब सोचता हुआ लौकिक दरवाजे को बंद करने के लिए आगे उसकी ओर बढ़ गया।

उसने अभी दरवाजा बन्द करके उसमें कुंडी लगानी चाही तभी अपने पीछे उसे कुछ आहट सुनाई दी। सुबह चार बजे का समय था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था सभी अड़ोसी–पड़ौसी आराम से चैन की नींद सो रहे थे। जरा–सी आवाज बहुत जोर की लगती थी। लौकिक ने पीछे पलटकर देखा तो हैरान रह गया।

उसे अपने घर की रसोई से एक अनजान व्यक्ति निकलता हुआ दिखाई दिया। अभी वह कुछ समझ पाता कि इससे पहले वह उसी द्वार के पास आकर घर से बाहर निकल भागने लगा। वह अभी द्वार खोलकर भागने का जतन कर ही रहा था तभी पूरी ताकत से टॉर्च का भरपूर प्रकाश लौकिक के चेहरे पर पड़ा। जिससे यकायक उसकी आँखें चौंधिया गईं।

यह टॉर्च का प्रकाश उस अनजान चोर के साथी ने दरवाजे के बाहर से लौकिक को भ्रमित करने के लिए उसके चेहरे पर डाला था। यह सब यकबयक अचानक हो गया। लौकिक इस सबके लिए बिलकुल भी तैयार नहीं था। इस घटनाक्रम में वे दोनों नन्हें लौकिक को चकमा देते हुए भाग ही जाते किन्तु लौकिक ने स्वयं को सँभालते हुए उस चोर को पीछे से पूरी ताकत से अपनी दोनों बाँहों में कसकर पीछे अपनी ओर अन्दर खींच

लिया और जोर से माँ–पिताजी को आवाज लगाई। अभी उसने दरवाजा नहीं खोल पाया था।

सुबह के उस सन्नाटे में लौकिक की चीख के भोर ने न केवल उसके माँ–पिता बल्कि मोहल्ले के दूसरे लोगों को भी जगा दिया। चोर स्वयं को बचाने और वहाँ से भागने के लिए लौकिक से हाथा–पाई कर रहा था। किन्तु लौकिक की पकड़ से छूट पाना इतना सरल नहीं था।

सबसे पहले लौकिक की माँ उठीं और जैसे ही उन्होंने एक अनजान आदमी से लौकिक को हाथा–पाई करते पाया वे घबरा गईं और तेजी से भागतीं हुईं उस चोर के पास जा पहुँचीं। उधर अब उस चोर को लगा कि दाँव उल्टा पड़ चुका है। बच्चे के माँ–पिता और पड़ोसियों के आ जाने पर वह पकड़ा जा सकता है। उसका साथी तो पहले ही अपनी जान बचाने के चक्कर में उसे मुसीबत में फँसा छोड़कर भाग गया था।

अपनी ओर से बचने का पूरा प्रयत्न करते हुए उसने अब अपनी जेब से स्क्रू ड्राइवर और चाकू निकाल लिया और पास आने वाली लौकिक की माँ पर हमला कर दिया। अपने बेटे को उस बदमाश चोर से बचाने का

प्रयत्न करने में वे असावधान थीं इसलिए चोट खा गईं। वे घायल होकर गिर गईं। अब चोर भागने को हुआ। किन्तु तब तक लौकिक के पिताजी राजीव भटकर पहुँच चुके थे। उन्होंने चोर को धर दबोचा।

लौकिक और उसके पिताजी ने उस चोर को बाँध लिया। अब तक लौकिक की चीख और शोरगुल सुनकर पड़ोस के काफी लोग भी वहाँ आ गए थे। तुरन्त जहाँ एक ओर घायल लौकिक की माँ की देखभाल की गई वहीं दूसरी ओर पुलिस को चोरी की सूचना दे दी गई।

पुलिस के आने पर जहाँ चोर को उसके हवाले किया गया वहीं चोर ने घर से चुराई गईं नकद राशि उन्हें वापस लौटा दी। वह चोर रात में ही किसी समय घर के पीछे के दरवाजे का ताला तोड़कर घर के अंदर घुस गया था। उसने आराम से स्क्रू ड्राइवर के सहारे अलमारी खोलकर मालमत्ता साफ कर दिया था।

वह बस अपना काम पूरा करके निकलने ही वाला था कि तभी लौकिक ने नींद से उठकर उसके सारे किए धरे पर पानी फेर दिया। लौकिक के साहसपूर्ण ढ़ंग से मुकाबला करने पर उसके घर से न केवल चोरी होने से बच गई वहीं उसकी हिम्मत और बहादुरी से चोर रंगे हाथों मौके पर पकड़ा भी गया।

लौकिक की इस बहादुरी की सूचना अगले दिन दैनिक समाचार–पत्र की सुर्खी बनी। किसी ने उसका नाम राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए उचित माध्यम से भेज दिया। लौकिक ने देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के हाथों वर्ष २००० का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार पाया। इस प्रकार से सारे देश के सामने अपनी बहादुरी से लौकिक ने महाराष्ट्र रायगढ़ पनवेल और अपने माता–पिता का नाम उज्ज्वल कर दिया।

नन्हे मित्रों!

पता नहीं है हमें, अचानक कब क्या हो जाए?
आए सपना आँखों में, या नींद ही खो जाए।
मत सोचो कर डालो, जो भी है तुमको करना,
क्या मतलब है जान, रहे या जाए तो जाए।।

– नई दिल्ली

कर्ण का जन्म

– मोहनलाल जोशी

यदुवंश में राजा शूरसेन थे। उनकी पुत्री का नाम कुन्ती था। नागवंशी राजा कुन्तिभोज ने उसे गोद लिया था।

एक बार राजा कुन्तिभोज के पास दुर्वासा मुनि आये। उस समय कुन्ती छोटी थी। उसने दुर्वासा मुनि की बहुत सेवा की। मुनि प्रसन्न हो गए। उन्होंने कुन्ती को एक मंत्र दिया। इस मंत्र से पुत्र पाने के लिए किसी भी देवता को बुला सकते हैं।

कुन्ती ने मंत्र को परखना चाहा। उसने सूर्यदेव को स्मरण किया। सूर्यदेव तुरन्त प्रकट हो गये। कुन्ती का अभी विवाह नहीं हुआ था। उसने कहा– मुझे पुत्र नहीं चाहिए। सूर्यदेव ने कहा– मंत्र झूठा नहीं हो सकता। मैं तुम्हें पुत्र देता हूँ। उस बालक ने उसके जन्म से ही कवच और कुण्डल पहने होंगे। सूर्यदेव चले गये। कुन्ती के पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम कर्ण रखा। कुन्ती ने कर्ण को नदी में बहा दिया। वह अधिरथ को मिल गया। अधिरथ ने उसे पाल–पोस कर बड़ा किया।

राजकुमारों की रंग भूमि और कर्ण का राज्याभिषेक

कुरु राजकुमारों की शिक्षा पूर्ण हुई। द्रोणाचार्य ने धृतराष्ट्र से कहा– इनके शस्त्रों का प्रदर्शन करना है।

भीष्मजी ने रंगभूमि बनवायी। सभी राजकुमारों ने अपने शस्त्रों का प्रदर्शन किया। सहस्रों दर्शक आये। भीम व दुर्योधन का गदा युद्ध हुआ। नकुल और सहदेव ने तलवार का प्रदर्शन किया। सभी मंत्र मुग्ध होकर देख रहे थे।

अर्जुन ने धनुष विद्या का प्रदर्शन किया। एक तीर से अग्निवर्षा होती। दूसरे तीर से पानी बरसता। अग्नि शांत हो जाती। तभी कर्ण ने ललकारा। द्रोणाचार्य ने कहा– कर्ण सूत पुत्र है। यह राजा भी नहीं है। इसलिए युद्ध नहीं हो सकता।

दुर्योधन कर्ण का मित्र था। उसने कर्ण को अंगप्रदेश का राजा बना दिया। **– बाड़मेर (राज.)**

कहानी

खुशी को मिला मकई का दाना

– प्रकाश मनु

छोटी–सी थी खुशी और हरदम खुश रहती थी। इसीलिए माँ ने उसका नाम रखा–खुशी। नन्ही खुशी को भी अपना नाम बड़ा प्यारा लगता है। इसीलिए वह स्वयं तो खुश रहती ही है, दूसरों को भी अपनी भोली बातों और नटखटपन से खुश कर देती है।

पर इधर कुछ दिनों से नन्ही खुशी जरा गंभीर है। उसकी परीक्षा पास आ गई है। इसलिए वह सब कुछ छोड़कर पढ़ाई–लिखाई में लग गई है। अब तो रात–दिन वह अपने गृहकार्य की कॉपी लिए कभी उस पर गिनती लिख रही होती, कभी पहाड़े, कभी क, ख, ग और कभी ए–बी–सी–डी–ई।

माँ को बड़ा अजीब लगता कि नन्ही खुशी पढ़ाई–लिखाई में इतनी गम्भीर हो गई। इतनी अधिक गम्भीर कि पढ़ाई के अलावा बाकी सारी चीजें भूल ही गई। माँ जो कुछ बनाकर देतीं, झटपट खा लेती और फिर से पढ़ाई में लग जाती। उसने सोच लिया था, इस बार मुझे अपनी कक्षा में प्रथम आकर दिखाना है, ताकि लोग कहें, ''देखो, नन्ही खुशी कितनी होशियार है। इस बार इसका एक भी अंक नहीं कटा। पूरे में पूरे अंक आए हैं।''

आखिर दस दिन बाद खुशी की परीक्षा समाप्त हो गई। अब तो समय खूब था– छुट्टियाँ ही छुट्टियाँ। खुशी जमकर उछली–कूदी और नाची।

नाचते–नाचते वह लॉन में गई तो पेड़ों ने, फूलों ने और फूलों पर उड़ती रंग–बिरंगी तितलियों ने हँसकर कहा– ''प्यारी खुशी, कैसी हो? बड़े दिनों बाद इतना प्रसन्न देखा है तुम्हें। रोज इतनी ही खुश रहो तो कितना अच्छा लगेगा हमें भी।''

इस पर खुशी बोली– ''अरे! मेरे पेपर थे ना! तो जरा पेपर की तैयारी तो जमकर करनी ही होती है। इस बार मेरे सारे प्रश्न सही गये। देखना पूरे में पूरे अंक आएँगे।''

कहते–कहते खुशी का ध्यान गुलाब के फूल पर बैठी काले रंग की तितली की ओर गया।

''अरे वाह! काली तितली और इतनी सुंदर। और फिर खुश–खुश भी कितनी है। लगता है, जैसे हँस रही हो।'' खुशी ने सोचा।

''और क्या हँसूंगी नहीं? तुम बातें ही ऐसी मजेदार करती हो।'' कहकर काली तितली बड़े जोर से हँस दी। फिर बोली– ''आओ खुशी, दौड़ें।''

सुनकर खुशी दौड़ी, वाकई दौड़ पड़ी। आगे–आगे काली वाली तितली, पीछे–पीछे खुशी। खुशी बड़ी तेजी से दौड़ रही थी और उसे लगता, लो जी लो, ये पकड़ा मैंने काली तितली को।

किन्तु तितली भी कम न थी। वह उड़कर यहाँ से वहाँ बैठ जाती, वहाँ से वहाँ। कभी गुडहल के लाल सुर्ख फूल पर तो कभी चंपा–चमेली और बेला–मोगरा के सफेद फूलों की कतार पर। खुशी खूब दौड़ी, उछली–कूदी, मगर तितली ने उसे खूब छकाया। न उसे पकड़ में आना था और न आई। और फिर खुशी जब घास की लाल पर बैठी–बैठी सुस्ता रही थी, तितली ने उसे 'बाय' किया और यह जा, वह जा।

खुशी सोच रही थी, ''अब क्या करूँ?''

बड़ी अच्छी–अच्छी धूप खिली थी और उसका खेलने का मन कर रहा था। तभी उसकी सहेली मीनू आई। बोली, ''चल खुशी, गेंद खेलें।''

मीनू के पास सुंदर–सी हरे रंग की गेंद थी। खुशी झट उसके साथ खेलने चल दी। झूला पार्क में जाकर दोनों देर तक खेलती रहीं। गेंद टप्पा खाकर कभी इधर जाती, कभी उधर। दोनों सहेलियाँ उसे पकड़ने दौड़तीं। जिसके हाथ वह गेंद आ जाती, उसका एक नंबर बढ़ जाता। कभी खुशी जीतती तो कभी हारती, पर हारने पर खुशी का मन उदास हो जाता। उसे हारने की आदत जो नहीं थी।

आखिर खेलते–खेलते मीनू के चार प्वाइंट अधिक हो गए। खुशी कुछ उदास हो गई। उसकी आँखों

में मोती जैसे आँसू झिलमिला उठे।

इस पर मीनू बोली, ''देखो खुशी! यह तो अच्छी बात नहीं है। अब हार गई हो तो रो रही हो। तब तो मैं ही झूठी-मूठी हार जाती हूँ, ताकि तुम हँसो-हँसती रहो।''

खुशी ने झट आँसू पोंछ लिए। बोली, ''मैं रो कहाँ रही हूँ?''

''और क्या, रो ही तो रही हो।'' मीनू बोली, ''इसका मतलब तो यह है कि तुम चाहती हो, खाली तुम जीतो, कोई और नहीं। अब मैं समझ गई, सब चाहे तुम्हें कुछ भी कहें, किन्तु तुम तुनकमिजाज हो।'' अब तो खुशी का जोर का रोना छूट गया। इस पर मीनू ने चुप कराने के बजाय उसका और मजाक उड़ाया। अपनी हरी गेंद लेकर हँसते-हँसते बोली, ''अच्छा खुशी! अब तू बैठकर आराम से रो, मैं तो अपने घर जाती हूँ।''

सुनकर खुशी का मन दुखी हो गया। इतनी चोट तो आज तक उसे किसी ने नहीं पहुँचाई थी। वह कुछ देर उदास-सी झूला पार्क में बैठी रही। फिर चुपचाप अपने घर की ओर जाने लगी।

खुशी इतनी उदास थी कि उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। यहाँ तक कि झूला झूलने की भी उसकी इच्छा नहीं हुई।

घर जाते हुए भी रास्ते में वह बस मीनू की हरी गेंद के बारे में सोच रही थी। मन ही मन कह रही थी, ''देखो, कितना घमंड हैं मीनू को अपनी गेंद का! मैं भी आज पिताजी से कहकर अपने लिए नई गेंद मँगवाऊँगी।''

''पर हाँ, यह बात तो मीनू की ठीक है कि मुझे अपनी हार पर रोना नहीं चाहिए था। खेल में जीत-हार तो चलती ही रहती है। इसमें भला रोना कैसा! यह मेरी गलती है। मुझे मीनू के आगे सॉरी फील करना चाहिए।''

खुशी यह सोचती हुई जा रही थी कि अचानक चलते-चलते वह चौंक गई। उसे लगा, रास्ते में कोई उसे देखकर हँस रहा है।

उसका ध्यान खुद-ब-खुद अपने पैरों के पास गया। वहाँ एक मकई का दाना था, बहुत बड़ा-सा मकई का दाना। एकदम सुनहरा-सुनहरा। वह खुशी को देखकर हँस रहा था। उसकी हँसी इतनी प्यारी और इतनी भोली थी कि खुशी चलते-चलते रुक गई।

कुछ देर खुशी खड़ी-खड़ी उस गोलमटोल, भोले-भाले किन्तु शरारती मकई के दाने को देखती रही। फिर बोली- ''अरे-अरे! तुम हँस क्यों रहे हो मकई के दाने?''

इस पर मकई का दाना और भी जोरों से हँसा- खुदर-खुदर.. खुदर खुदर! खुशी को बड़ी हैरानी हुई। बोली- ''ओ रे ओ मकई के दाने! तुमने बताया नहीं कि तुम हँस क्यों रहे हो?''

''क्योंकि तुम बुद्धू हो, बुद्धू-बिलकुल बुद्धू!'' मकई का दाना फिर हँसा। फिर थोड़ा सीरियस होकर बोला, ''तुम तो इतनी बुद्धू हो खुशी कि जरा-सी बात पर रो देती हो। अगर तुम्हारी सहेली मीनू ने मजाक उड़ाया तो इसका मतलब यह तो नहीं कि सारे के सारे लोग बुरे हैं। आओ चलो, मेरे साथ खेलो।''

''तुम्हारे साथ?'' खुशी की उदासी एकदम समाप्त हो गई। उसे इतनी हैरानी हुई कि मारे खुशी के वह हँसने लगी। फिर बोली- ''अरे रे ओ मकई के दाने! भला तुम्हारे साथ मैं क्या खेलूँ?''

''अरे! मैं दौड़ तो लगा ही सकता हूँ। तुम क्या मुझे कम समझती हो? खूब तेज दौड़ता हूँ मैं, खूब तेज। आओ, दौड़ो मेरे साथ।'' मकई का दाना खिलखिलाकर बोला और झटपट उसने दौड़ लगा दी। साथ ही साथ खुशी भी दौड़ पड़ी।

दोनों दौड़ते रहे, दौड़ते रहे देर तक। देर तक मगन होकर खेलते रहे। खुशी पहली बार इतनी तेज, इतनी तेज दौड़ी थी कि एकदम पसीने-पसीने होकर हाँफ रही थी। पर उसे अच्छा भी लग रहा था। बड़े दिनों बाद वह अपने कमरे से निकलकर पार्क की खुली हवा में आई थी।

उसने एक बार फिर मकई के दाने की ओर देखा। वह अब भी उतनी ही शरारत से हँस रहा था और पार्क में बिलकुल मीनू की हरी गेंद की तरह टप्पे खा रहा था। मजे में उछल और कूद रहा था।

मकई के दाने के ये अजीबो-गरीब करतब देखकर खुशी भी उछल पड़ी और जोर-जोर से तालियाँ बजाकर हँसने लगी।

कुछ देर बाद खुशी की माँ उसे ढूँढ़ते हुए झूला पार्क में आ गईं। वे कुछ परेशान-सी थीं। असल में अभी

कुछ देर पहले ही उनका ध्यान गया कि खुशी तो घर में कहीं नजर कहीं आ रही। उन्होंने घर में ऊपर-नीचे, इधर-उधर हर जगह देखा। एक-एक कमरा खँगाल लिया। फिर भी नहीं मिली तो सोचा, शायद झूला पार्क में खेलने आ गई होगी।

वाकई झूला पार्क में खुशी थी। खूब खुश थी और मकई के दाने के पीछे-पीछे दौड़ती हुई, उसके करतब देखती, तालियाँ बजाकर हँस रही थी।

माँ आई तो मकई का दाना न जाने कहाँ लुक-छिप गया। माँ ने देखा, खुशी मगन होकर तालियाँ बजा रही है। नाच-गा रही है और उसके चेहरे पर बड़ी लाली और रौनक है।

माँ ने बड़े प्यार से खुशी का माथा चूम लिया। बोलीं, ''आज बड़े दिनों बाद तुझे इतना प्रसन्न देख रही हूँ। आज क्या बात है खुशी?''

''माँ-माँ, वो मकई का दाना!'' खुशी के मुँह से निकला। ''कौन-सा.. कौन-सा मकई का दाना? क्या कह रही है तू?'' माँ ने हैरानी से खुशी की ओर देखकर पूछा।

''अरे वाकई!'' नन्ही खुशी ने हैरानी से देखा, मकई का दाना तो कहीं था ही नहीं। एकदम गायब हो गया था।

खुशी ने घर चलते हुए माँ को मकई के दाने का किस्सा सुनाया तो माँ हँसकर बोलीं, ''ओह! मैं समझ गई, तू अवश्य कोई कहानी सुना रही है। वरना मकई का दाना भी कहीं गेंद की तरह उछलता-कूदता, नाचता और दौड़ता है।''

खुशी बिल्कुल समझ नहीं पा रही थी कि वह कैसे माँ को बताए कि माँ-माँ, वाकई मकई का दाना था और अभी-अभी मेरे साथ खूब जोरों से दौड़-भाग रहा था और खेल रहा था। तभी तो आज मैं खुश हूँ। इतनी खुश, इतनी खुश... कि क्या कहूँ।

उसने सोचा, अगली बार मकई का दाना आया तो वह उसे माँ से अवश्य मिलवाएगी।

- फरीदाबाद (हरियाणा)

छोटी कहानी

मेरा उड़न खटोला

– प्राजक्ता देशपांडे

''वाह नानी! इस मिठाई को देखकर ही मुँह में पानी आ गया।'' विनय विडियो कॉल पर पास के शहर में बसी नानी से बात कर रहा था।

''हाँ बाबू! तुझे बहुत पसंद हैं ना ये मिठाई, काश कि, मेरे पास एक उड़न खटोला होता जिसमें इसे भिजवा पाती।'' नानी ने उदास होकर कहा।

''उड़न खटोला मतलब?'' विनय की उत्सुकता जागी।

''फिर कभी बताऊँगी, अभी माँ को फोन दे।'' हँसते हुए नानी ने कहा। नौ वर्ष के विनय को अपनी नानी के हाथ के बने सभी व्यंजन बहुत पसंद थे। शाम को वह अपने मित्रों से मिला आज खेलने का मन किसी का भी नहीं था तो सब आपस में बातें करने लगे।

''पता हैं कल मैंने 'ड्रोन' के बारे में इन्टरनेट पर पढ़ा और कुछ वीडियोज भी देखे।'' पराग ने कहा।

''हाँ भाई! परसों मैं शादी की दावत में गया था वाहन ड्रोन वाले कैमरे से फोटोग्राफी हो रही थी।'' विक्की बोला।

''मेरे पिताजी के दोस्त के यहाँ मैंने इसे देखा भी हैं।'' अब बारी चिंटू की थी।

''लेकिन क्या ये ड्रोन हेलीकॉप्टर की तरह होता है?'' विनय ने अपनी शंका रखी।

''अरे नहीं! ड्रोन एक ऐसा चालक रहित विमान होता है जिसकी सहायता से आकाश मार्ग द्वारा किसी सामान की डिलीवरी, स्थान की निगरानी और युद्ध में आकाशीय बमबारी जैसे कार्य को अंजाब दिए जाते हैं। ड्रोन की सहायता से संकट की स्थिति में आवश्यकता वाले की सहायता भी की जाती है।''

पराग ने समझाया।

''ड्रोन को उड़ने वाला रोबोट भी कहा जाता है जिसका कंट्रोल रिमोट सिस्टम के माध्यम से एक व्यक्ति करता है इसे आसमानी आँख भी कहा जाता है।'' चिंटू ने आगे बताया।

''लेकिन इसके लाभ क्या हैं?'' विनय ने पूछा।

''ड्रोन के माध्यम से उन कार्यों को भी कर सकते हैं जिसे इंसान के करने में उसकी जान को खतरा पैदा हो। विशेषकर ड्रोन का इस्तेमाल सैन्य शक्तियाँ करती हैं जैसे रूस-उक्रेन युद्ध के दौरान उक्रेन ने ड्रोन हमलों के द्वारा रूस के टैंकों को नष्ट किया।'' पराग बोला।

''वैसे इसका उपयोग कई स्थान पर किया जाता जैसे फिल्म की शूटिंग के लिए बड़े पैमाने पर खेती में बीज डालने के लिए, महानगरों के ट्रैफिक पर नजर रखने के लिए, युद्ध के दौरान दुश्मनों पर निगरानी के लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी सामान को पहुँचाने के लिए।'' विक्की ने ड्रोन के बारे में जानकारी दी।

''लेकिन यह कितनी दूर तक उड़ सकता है?'' विनय ने प्रश्न किया।

''यह उनके वजन और आकार पर निर्भर करता है।'' चिंटू ने बताया।

बहुत देर तक सभी के बीच इस विषय पर बातें चलती रही, बाद में सब अपने घर चले गए।

रात के खाने के बाद सोने से पहले विनय ड्रोन के बारे में इन्टरनेट पर पढ़ता रहा।

''माँ, माँ! जल्दी आओ नानी ने आज मिठाई भेजी है साथ में कचोरी भी है।'' विनय अपने हाथों को हिलाते हुए कह रहा था।

''अरे उठो भी! क्या सपना देखा? दो दिन के लिए हमें नानी के घर जाना है, तुम्हारी शाला की छुट्टी है ना।'' विनय को नींद से उठाते हुए माँ कह रही थी।

विनय हड़बड़ाकर जागा, वह नानी के घर जाने की बात सुन बहुत प्रसन्न था उसे उड़न खटोले के सपने के बारे में उन्हें बताना जो था।-**इन्दौर (म.प्र.)**

कविता

मोबाइल का ठसका

– ओम उपाध्याय

गाँव शहर, कस्बे
जैसे ही वन में
रेडियो के बाद
टी. वी. आया,
और फिर
मोबाइल ने
जाल फैलाया।
शेर बन्दर
भालू लोमड़ी,
सब की व्यस्त
कान संग खोपड़ी।

भूल गए सब
मारा-मारी,
मोबाइल की थी
ऐसी यारी।
मोबाइल का
लगा था चस्का
जिसका था ऐसा ठसका
रोक पाना जिसे
नहीं किसी के
बस का।

– इन्दौर (म. प्र.)

कलम की पूजा

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

श्रेया ने जब घर कदम रखा तो अपने पिता से पूछा– ''पिताजी! एक बात बताइए न?'' कहते हुए वह पिता के गले से लिपट गई।

''क्या बात है?'' श्रेया के पिता ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा, ''आखिर तुम क्या पूछना चाहती हो?''

''यही कि गुरुजी अपनी कलम की पूजा बसंत पंचमी को क्यों करते हैं?'' श्रेया ने पूछा तो उसके पिता ने उत्तर दिया, ''यह भारतीय संस्कृति और परंपरा है जिस चीज का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है हम उसको सम्मान देने के लिए उसकी पूजा करते हैं।

''इससे उस उपयोगी चीज के प्रति हमारे मन में अगाध प्रेम पैदा होता है तथा हम उसका उत्तम उपयोग कर पाते हैं।''

''मगर बसंत पंचमी को ही कलम की पूजा क्यों की जाती है?'' श्रेया ने पूछा।

''इसका अपना कारण और अपनी कहानी है।'' पिता ने कहा, ''क्या तुम वह कहानी सुनना चाहोगी?'' ''हाँ!'' श्रेया बोली, ''सुनाइए न वह कहानी।''

''तो सुनो!'' उसके पिता ने कहना शुरु किया, ''बहुत पहले की बात है। जब सृष्टि की संरचना का कार्य ब्रह्मा जी ने शुरु किया था। उस समय ब्रह्मा जी ने मनुष्य का निर्माण कर लिया था।'' ''जी!'' श्रेया ने कहा।

''उस समय सृष्टि में सन्नाटा पसरा हुआ था,'' पिता ने कहना जारी रखा, ''तब ब्रह्मा जी को सृष्टि में कुछ–कुछ अधूरापन लगा। हर चीज मौन थीं। पानी में कल–कल की ध्वनि नहीं थी।

''हवा बिल्कुल शांत थी। उसमें साँय–साँय की ध्वनि नहीं थी। मनुष्य बोलना नहीं जानता था। इसलिए ब्रह्मा जी ने सोचा कि इस सन्नाटे को समाप्त करना चाहिए। तब उन्होंने अपने कमंडल से जल निकालकर छिटका। तब एक देवी की उत्पत्ति हुई। यह देवी अपने एक हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में पुस्तक व माला लेकर उत्पन्न हुई थी।''

''इस देवी को ब्रह्मा जी की मानस–पुत्री कहा गया। इसका नाम था सरस्वती देवी। उन्होंने ब्रह्मा जी

की आज्ञा से वीणा वादन किया।''

''फिर क्या हुआ पिताजी!'' श्रेया ने पूछा।

''होना क्या था?'' पिता ने कहा, ''वीणा वादन से धरती में कंपन हुआ। मनुष्य को स्वर यानी–वाणी मिली। जल को कल–कल का स्वर मिला। यानी पूरे वातावरण से सन्नाटा गायब हो गया।''

''अच्छा!''

''हाँ!'' पिता ने कहा, ''इसी वीणा वादन की स्वर लहरी से बुद्धि की देवी का वास मानव तन में हुआ। जिससे बुद्धि की देवी सरस्वती पुस्तक के साथ–साथ मानव तन–मन में समाहित हो गई।''

''वाह! यह तो आनंदमयी कहानी है।''

''हाँ! इसी वजह से माघ पंचमी के दिन सरस्वती जयंती के रूप में हम बसंत पंचमी का त्यौहार मनाते हैं।'' पिता ने कहा, ''इस समय की ऋतु सुहावनी होती है। न गर्मी, न ठंडी और न बरसात का समय होता है। प्रकृति अपने पूरे निखार पर होती है। ''फसल पककर घर में आ चुकी होती है। हम धनधान्य से परिपूर्ण हो जाते हैं। इस कारण इस दिन बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती की पूजा करके इसे धूमधाम से मनाते हैं।

''चूँकि शिक्षक का काम शिक्षा देना होता है। वे सरस्वती के उपासक होते हैं। इस कारण कलम की पूजा करते हैं।'' पिता ने कहा। ''तब तो हमें भी कलम की पूजा करना चाहिए।'' श्रेया ने कहा, ''हम भी विद्यार्थी हैं। हमें विद्या की देवी, विद्या का उपहार दे सकती हैं।''

''बिलकुल सही कहा श्रेया।'' पिता ने कहा और श्रेया को ढेर सारा आशीर्वाद देकर बोले, ''हमारी बेटी श्रेया आजकल बहुत होशियार हो गई है।''

''इस कारण वह इस बसंत पंचमी पर अपनी कलम की पूजा करेगी।'' कहते हुए श्रेया ने पास रखी वीणा के तार को छेड़ दिया। वीणा झंकृत हो चुकी थी।

– नीमच (म. प्र.)

कविता – जयंती : १९ फरवरी

ऐसे वीर शिवा महान

– डॉ. उमेश प्रताप वत्स

जीजाबाई की वीर संतान, भारत का है गौरव गान।
थे स्वराज्य के उद्घोषक जो, ऐसे वीर शिवा महान।।
शिवनेरी दुर्ग में लिया जन्म, माँ की गोद में पले–बढ़े।
गीता और रामायण सुनकर, वीर शिवाजी हुए खड़े।।
मुगलों का था देश में शासन, गिरवी पड़ा मान–सम्मान।
थे स्वराज्य के उद्घोषक जो, ऐसे वीर शिवा महान।।
वीर मराठे, वनवासी और, वंचित वर्गों का ले साथ।
बने स्वराज के यौद्धा सारे, पूछा धर्म जात ना पात।।
हर जन–गण की सेना लेकर, युद्ध किया लगा दी जान।
थे स्वराज्य के उद्घोषक जो, ऐसे वीर शिवा महान।।
आदिलशाह का तख्त हिलाया, शाईस्ता को धूल चटाई।
सेना में हर वर्ग का सैनिक, रणभूमि में करें लड़ाई।।
अफजल खाँ को मार शिवा ने, जाग्रत किया देश का मान।
थे स्वराज्य के उद्घोषक जो, ऐसे वीर शिवा महान।।
हम भी शिवा के पद चिह्नों पर, देश का मान बढ़ायेंगे।

हर क्षेत्र में आगे बढ़कर, विजय तराना गायेंगे।।
कहे 'वत्स' ये देश के सैनिक, हिन्दुस्थान की आन और शान।
थे स्वराज्य के उद्घोषक जो, ऐसे वीर शिवा महान।।

– यमुनानगर (हरियाणा)

कविता

हम बच्चे

– अनुराधा तिवारी 'अनु'

हम भारत माता का गौरव
नवयुग की पहचान हैं।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।
वीर शिवा की हम तलवारें
हम ही राणा के भाले।
भगत सिंह का जोश हृदय में
हम तूफानों के पाले।।
हम कलाम, हम ही गाँधी हैं
वीर सुभाष महान हैं।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।१।।
साहित्य कला संगीत नृत्य
खेलों में नाम कमाएँगे।
ज्ञान और विज्ञान क्षेत्र में,
हम परचम लहराएँगे।।
पूर्वजों की अमिट धरोहर संस्कारों की खान है।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।२।।
नहीं किसी से बैर रखेंगे
अपनी हद ना तोड़ेंगे।
पर कोई हमको ललकारे
उसको ना हम छोड़ेंगे।।
विश्व शांति के प्रबल पुजारी
भारत के अभिमान हैं।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।३।।
धर्म जाति की तोड़ दीवारें
नफरत ना फैलाएँगे।
भेदभाव से दूर रहेंगे
मानव धर्म चलाएँगे।।
विश्व गुरु बन जाए भारत
दिल में यह अरमान है।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।४।।
हम भारत माता का गौरव
नवयुग की पहचान हैं।
हम बच्चे ही होने वाला स्वर्णिम हिंदुस्थान हैं।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

पैसे वाला दोस्त

चित्रकथा: देवांशु वत्स

गोपाल का भतीजा

– तपेश भौमिक

गोपाल परले दर्जे का कंजूस तो था ही, इससे ऊपर वह पहले क्रम का पेटू भी था। उसने दो मंजिला मकान बनाने के लिए पहले ही कई बार महाराज के पास अर्जी दे चुका था पर महाराज के कान में जूँ तक नहीं रेंगी थी। अत: उसने बाँस और चटाई की सहायता से एक दुमंजिली कुटी बना ली। जब महाराज ने यह देख कर पूछा था कि उसने ऐसी कुटी क्यों बनाई है। तब उसने तब कहा था कि अन्य दरबारियों–सा उसके पास दो मंजिला मकान तो नहीं है, इसलिए उसने अपनी औकात के अनुसार दो मंजिली कुटी ही खड़ी कर ली। आखिरकार महाराज का स्वागत जो करना है। अब महाराज को यह समझते देर न लगी कि आखिरकार गोपाल कहना क्या चाहता है। महाराज ने मुस्कुराकर मन–ही–मन कहा कि सचमुच गोपाल की चालें निराली हुआ करती हैं। उसे सहायता करनी ही चाहिए।

दूसरे ही दिन महाराज ने गोपाल को दो–मंजिली मकान बनाने के लिए आर्थिक सहायता की तो वह मकान बनाते हुए यह सोचता रहा कि लोग उसके मकान को देखकर खूब प्रशंसा करेंगे। जब उसका दो मंजिला मकान बनकर तैयार हो गया तब वह अपनी दूसरी मंजिल से ही अपने आस–पड़ोस के लोगों से चिल्ला–चिल्लाकर बातें करने लगा। लोगों को बात–बेबात अपने यहाँ ऊपरी मंजिल में बुलाने लगा। लोग आ–आकर उसकी दो मंजिली इमारत की बड़ाई करते तो वह फूल कर कुप्पा हो जाता और दोगुनी उत्साह से औरों को बुलाता।

लेकिन एक बात उसे कई दिनों से खटक रही थी कि बगल में रहने वाला भतीजा अब तक उसका मकान देखने नहीं आया था। उसने दूसरी मंजिल से ही चिल्ला कर अपने भतीजे को एक दिन बुलाया तो उसने अपने कच्चे मकान से ही जवाब दिया, ''काकाजी! मैंने एक दुधारू गाय मोल ली है। पच्चीस सेर दूध देने वाली गाय है। मेरा सारा समय अब उसकी देख–रेख में ही बीत जाता है। मुझे उचित समय मिलने पर अवश्य जाऊँगा। अत: फिलहाल आप चले आइए बतियाने के लिए।''

गोपाल ने सोचा कि जिस प्रकार मैं अपना मकान दिखाने के लिए भतीजे को छत से बुला रहा हूँ, ठीक उसी प्रकार वह अपनी दुधारू गाय दिखाने के लिए अपने घर से बुला रहा है। मैं नहीं जाने वाला। मैं उसका काका हूँ न कि वह मेरा काका है।

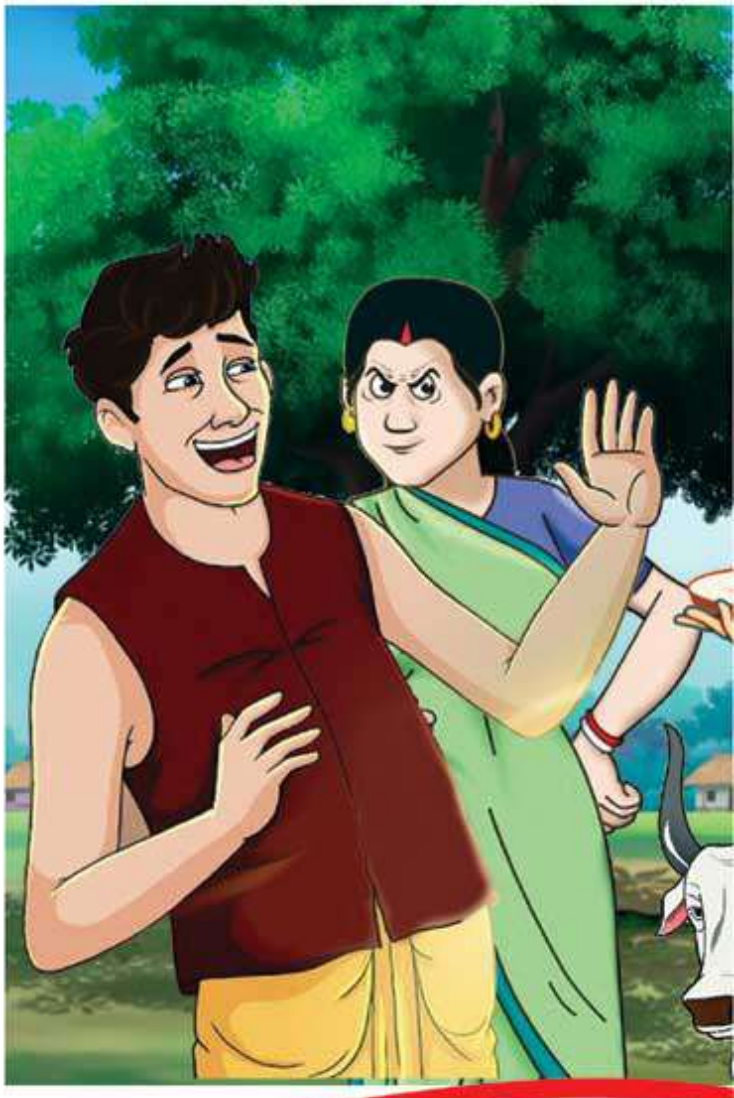

दूसरे दिन गोपाल का भतीजा अपनी पत्नी से झगड़े का नाटक करने लगा। झगड़े का शोर सुनकर उसने भतीजे के यहाँ जाने की बात सोची। उसने छत से ही चिल्ला कर पूछा, ''क्या बात है, तुम दोनों लड़ क्यों रहे हो?''

भतीजे ने जवाब दिया, ''देखिए न काका! आपकी बहुजी अपने मायके जाना चाहती है। नए गाय के दूध से खीर बना.....।''

सारी बात समझने में गोपाल को देर नहीं लगी। उसके मुँह में पानी आ गया। उसने अपने अहंकार से हटकर भतीजे के घर जाने का निश्चय कर लिया। मुँह में आए लार को पहले गुटका और फिर पत्नी को बुला कर कहा, ''अरे! सुनती हो, मैं भतीजे के यहाँ जा रहा हूँ, उनके झगड़े की सुलह कराने के लिए। आखिरकार हम बड़े किस काम के। हमारा तो परम कर्त्तव्य होता है कि छोटे जब लड़े तब बड़े उनमें सुलह करा दे। और हाँ, उसने पच्चीस सेरी दुधारू गाय मोल ली है। खीर बनी है। वे मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। अ: क्या बात है! बहुत दिनों से खीर पर हाथ नहीं लगा है।'' पत्नी ने ठठा कर हँसते हुए कहा, ''बहुरिया तुम्हें खीर खिला दे तब कहना। पेटु कहीं का।''

बस क्या था मिनटों में गोपाल अपने भतीजे के घर पहुँच गया। जाते ही भतीजे ने अपने काका के पास दोगुनी उत्साह से शिकायत दर्ज कराई कि बहुरिया बात-बात पर मायके जाना चाहती है। बहू ने काका ससुर को सामने पाकर बिलख-बिलख कर रोने लगी। इस बात पर उसने सुलह कराते हुए कहा कि अपनी धर्मपत्नी से झगड़ा नहीं करना चाहिए। उसे जाने दो। हालाँकि कोई ऐसा दिन न होता कि गोपाल का अपनी पत्नी से झगड़ा नहीं होता था। बहुरिया को इतना सुनना था कि वह हँसने लगा। उसने अपने काका ससुर के पाँव छुए। उधर भतीजे ने अपनी गाय दिखाई गर्व से तो उसकी पत्नी ने खीर की हाँडी लेकर निकल पड़ी मिनटों में। गोपाल ने खीर की खुशबू का अनुभव करते हुए बुदबुदा कर कहा, ''भतीजा अपने काका से बढ़कर।''

एक वर्ष तक भतीजे ने दूध बेचकर खूब पैसे कमाए। दूसरे ही बरस दो और गायें खरीदी। फिर क्या था भतीजे ने दो मंजिली मकान बना ली और अपने ही मकान के छत से गोपाल काका को कहने लगा, ''काका! आपके मकान को देखने के लिए ही मैंने अपने मेहनत से दो मंजिला मकान बनाया है। हम जैसे लोगों की महाराज सहायता नहीं करने वाले हैं। इस बात पर गोपाल ने इतना कहा, ''भतीजा काका से बढ़कर।''

- गुड़ियाहाटी,
कूचबिहार (पं. बंगाल)

घर का वैद्य

खुजली और रूसी का उपचार

– उषा भण्डारी

दीपक ने पूछा– दादाजी! शरीर में खुजली चल रही हो। तो क्या करना चाहिए?

दादाजी ने कहा– सरसों के तेल से मालिश करने से खुजली में आराम मिलता है। या नारियल के सौ ग्राम तेल में पाँच ग्राम देसी कपूर और थोड़ा–सा पान में डालने का पोदिना (पीपरमेंट) मिला दें। इसे दो घंटे के लिए धूप में रख दें। इस तेल की सुबह शाम मालिश करने से खुजली ठीक हो जाती है और चमड़ी के दूसरे रोग नहीं होते हैं।

दीपक ने कहा– दादाजी! नीम के साबुन से नहाने से भी क्या खुजली ठीक हो जाती है?

दादाजी ने बताया– नीम के पत्तों को धो लें। ताकि धूल और जाले हों तो साफ हो जाएँ। इन पत्तों को पानी में उबालें। इस पानी से नहाने से खुजली और चमड़ी के दूसरे रोग ठीक हो जाते हैं। नीम की कोमल पत्तियों को पीसकर उनकी छोटी–छोटी गोलियाँ बना लें। और सुबह शाम पानी से खा लें सात दिन तक ऐसा करने से चमड़ी के रोग ठीक हो जाते हैं। यह खून साफ करने का सबसे कब पैसे का सरल उपाय है।

सुनीता ने पूछा– दादाजी! सिर में खुजली होने पर भी क्या यही उपचार करना चाहिए?

दादाजी ने कहा– सिर में रूसी होने पर या सिर की चमड़ी सूखी होने पर खुजली होती है। इसलिए सिर की खुजली का इलाज अलग से होता है।

दादाजी ने आगे बताया– आधा चम्मच नींबू का रस और एक चम्मच नारियल का तेल मिलाकर सिर में मालिश करे। ऐसा दिन में दो बार करें। दादाजी ने एक और उपाय बताया– नारियल के सौ ग्राम तेल में पाँच ग्राम देशी कपूर मिलाकर शीशी में रख लें। नहाने के बाद बाल सुखाकर इस तेल की मालिश करें। कुछ ही दिनों में रूसी समाप्त हो जाती है। सुनीता ने जानना चाहा– क्या आंवला, अरीठा और शिकाकाई के पानी से भी रूसी ठीक हो जाती है? दादाजी ने कहा– हाँ एक लीटर पानी लें। उसमें शाम को आंवला, अरीठा और शिकाकाई का एक–एक चम्मच चूरण डाल दें। यह पानी रात भर पड़ा रहने दे। सुबह उसे मसल कर छान लें इस पानी को बालों में लगाने से वालों के सभी रोग दूर हो जाते हैं और बाल मुलायम और लम्बे हो जाते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

☺ छः अँगुल मुस्कान ☺

मैं पहली बार महँगे होटल में गया और चाय मँगाई... वेटर एक ट्रे में गरम पानी का थर्मस, टी–बेग, दूध पाउडर और शुगर क्यूब दे गया। बड़ी मुसीबत से मैंने सब मिला करके चाय बनाकर पी! वेटर ने पूछा, ''और कुछ लाना है?''

मैं– वैसे तो मुझे गरमागरम समोसे खाने की इच्छा है, पर सोचता हूँ, भाई! तू इतने छोटे से टेबल पर आटा, आलू, तेल की कड़ाही और गैस का चूल्हा कैसे रखेगा?

*****

ग्राहक– ऊँचा सुनने की मशीन कितने की है? **दुकानदार** – २० रुपये २० हजार रुपये तक!

ग्राहक – २० रुपये वाली दिखाओ.....

दुकानदार – ये लीजिए, कान में लगाने का एक बटन और बटन से शर्ट की जेब तक एक वायर का टुकड़ा ग्राहक ये काम कैसे करती है? दुकानदार ये कुछ भी काम नहीं करती इसे लगा देखकर लोग आपसे जोर–जोर से बोलते हैं... हमारे यहाँ सबसे अधिक यही मशीन बिकती है।

परेशानी

चित्रकथा-

राजा के एक मंत्री को परेशान देखकर दूसरे मंत्री ने पूछा-

क्या बात है... परेशान क्यों हो?

क्या बताऊं मित्र, आज राजाजी ने मुझसे एक घंटे लगातार बात की...

फिर अचानक उन्होंने मुझे मूर्ख कहा..

तो तुम परेशान क्यों हो, राजाजी ने तुम्हें मूर्ख कहा इसलिए

..या एक घंटे बाद कहा इसलिए

टिम्मी के गोलगप्पे

– डॉ. अलका अग्रवाल

टिम्मी के घर में विभा बुआजी और फूफाजी आए हुए थे। सब लोग बहुत ही खुश थे। छोटी–सी टिम्मी भी नई फ्रॉक पहने इतराती घूम रही थी। वह देख रही थी कि माँ, बुआजी, फूफाजी की पसंद की चीजें बना रही हैं। पिताजी बाजार से मिठाईयाँ और नमकीन ला रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई त्यौहार हो।

बुआजी टिम्मी के लिए कई खिलौने लाई थीं और उन्होंने टिम्मी को बहुत सुंदर–सी कढ़ाई और लेस वाली फ्रॉक दिलाई थी। इन सब उपहारों को देख–देखकर टिम्मी खुश हो रही थी और उसने ये सब चीजें पड़ोस के बच्चों रिंकू और चिंकी को भी दिखाई थीं। फूफाजी ने उसे साथ लेकर बाल उद्यान जाने का भी कार्यक्रम बना लिया था।

शाम को बुआजी की पसंद के अनुसार माँ ने गोलगप्पे मँगवाए थे। टिम्मी को बड़ा मजा आ रहा था। गोलगप्पे का पानी माँ के घर में ही बनाया था। टिम्मी ने चखकर देखा, खूब खट्टा और चटपटा पानी था। पूरा चाट का स्टॉल लगा हुआ था, घर में। सब लोग मजे ले लेकर खा रहे थे। एक बार में पूरा गोलगप्पा रखने पर मुँह भी गोल गप्पे जैसा अवश्य फूल जाता था उनका, पर दूसरे ही पल गोलगप्पा गायब। टिम्मी ने भी गोलगप्पा खाने की कोशिश की, पर इतने छोटे–से मुँह में इतना बड़ा–सा गोलगप्पा आना तो मुश्किल था न? कई बार टिम्मी ने कोशिश की, लेकिन हर बार एक छोटा टुकड़ा ही उसके में मुँह में जा पाता और उस गोलगप्पे का पानी उसके कपड़ों पर ही फैल जाता। उसकी परेशानी से अनजान, सभी बड़े गोलगप्पों पर हाथ साफ कर रहे थे। उसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। जब ध्यान गया और उसे परेशान देखा तो बड़ों को बरबस हँसी आ गई। सबको हँसते देखकर टिम्मी रूँआसी हो गई।

माँ ने टिम्मी की परेशानी समझते हुए आलू भरकर, दही–सौंठ डालकर, टिम्मी को गोलगप्पे को दिए, जिससे वह चम्मच से खा सके और बड़े गोलगप्पे के कारण उसे कोई परेशानी ना हो। लेकिन टिम्मी को भी सबकी तरह पानी भरकर गोलगप्पे खाने थे। माँ ने कितना मजेदार पानी बनाया था।

टिम्मी को उदास देखकर, बुआ ने पूछा,

''क्या हुआ हमारी टिम्मी उदास कैसे हो गई?''

''कुछ नहीं, ठीक तो हूँ।''

बड़ों की तरह अपनी बात छुपाते हुए टिम्मी

बोली।

लेकिन जब बुआ ने कई बार पूछा तो टिम्मी सुबकने लगी और फिर जोर–जोर से रोने लगी। बुआ ने गोद में लेकर प्यार से टिम्मी की पीठ सहलाई आँसू पोंछे और लाड़ लड़ाते हुए बोलीं,

''कुछ तो हुआ है, ऐसे ही मोती आ गए क्या गालों पर ? बुआ को तो बताएगी ना क्या हुआ ?''

टिम्मी अब चुप ना रह सकी। जोर–जोर से रोते हुए कहने लगी, ''पिताजी गंदे हैं, छोटे–छोटे गोले गप्पे नहीं लाते। मैं भी तो पानी भर के खाना चाहती हूँ। पर इतने बड़े गोलगप्पे मेरे मुँह में ही नहीं आते।''

अब बात समझ में आई सबके। पिताजी के

पास इसका उत्तर तैयार था, ''देखो बेटा! बाजार में मिलते ही इतने बड़े हैं तो क्या करें।''

इस बात से गुस्सा और बढ़ गया टिम्मी का। रोते हुए कहने लगी, ''सब गंदे हैं, बच्चों का ध्यान नहीं रखते।'' ''हाँ! यह बात तो है। माँ बोलीं।

''पर हमें भी इस बात का ध्यान नहीं आया। यह तो वाकई हमसे गलती हो गई। जब हम सब खा रहे हैं तो हमारी गुड़िया कैसे रह जाएगी।'' माँ ने गलती अनुभव की।

''चलो टिम्मी! हम अभी तुरंत तुम्हारे लिए ने गोलगप्पे बनाते हैं। और सॉरी बेटा! हमने पहले यह ध्यान ही नहीं दिया। नहीं तो हम पहले ही बना देते। चलो कोई बात नहीं, अब हम अपनी गलती सुधार लेते हैं।'' कान पकड़ते हुए बुआ बोलीं। टिम्मी के चेहरे पर बुआ के कान पकड़ने से मुस्कान फैल गई। पर कुछ अविश्वास से बोली।

''सच,ऐसे गोल–मटोल, छोटे–छोटे गोल गप्पे बनाने आते हैं आपको ?''

''इससे भी अच्छे बनाने आते हैं और तुम भी मेरे साथ बनाओगी।'' कहते हुए बुआजी टिम्मी को लेकर रसोई में काम करने लगीं। उन्होंने थोड़ा–सा आटा गूँधा और उसकी रोटी बनाई और एक काँच की शीशी का छोटा–सा ढक्कन लेकर, उस रोटी से एक गोलगप्पा काटकर टिम्मी को दिखाया, ''देखो, इतना छोटा–सा ठीक रहेगा तुम्हारे लिए ?''

टिम्मी की आँखें चमकने लगीं,

''हाँ! बिल्कुल इतना नन्हा–सा ही तो चाहिए था मुझे।'' खुश होकर टिम्मी बोली।

''अब देखो, तुम इस ढक्कन से बनाओ और मैं दूसरी रोटी बेलती हूँ।'' बुआ जी ने कहा।

टिम्मी अपने नन्हे हाथों से गोलगप्पे काट रही थी। बुआ जी ने गैस पर कढ़ाई रख दी और गोल गप्पे गेंद जैसे गोल–गोल, फूल–फूलकर कढ़ाई से बाहर निकलने लगे। थोड़ी दूर में एक बड़ी प्लेट में गोलगप्पे

खिलखिला रहे थे। बुआजी ने सबकी टिम्मी का साथ देने के लिए बुलाया।

''आप सब देखो टिम्मी ने कितने प्यारे गोलगप्पे बनाए हैं।'' बुआ जी ने सबको दिखाते हुए कहा।

''वाह! हमारी टिम्मी को भी गोलगप्पे बनाने आते हैं। हमें तो पता ही नहीं था।'' माँ-पिताजी और फूफा जी ने आश्चर्य से कहा।

''आप देख लीजिए, कितने अच्छे बनाए हैं।'' बुआजी ने कहा।

टिम्मी को तो गोलगप्पे खाने की जल्दी थी। उसके मुँह में पानी आ रहा था।

टिम्मी ने सबसे पहले छोटे से गोलगप्पे में पानी भरा और शान से अपने मुँह में रख लिया, व्आआह! क्या स्वाद है। टिम्मी ने मन ही मन सोचा। सबने तालियाँ बजाई और टिम्मी के साथ सभी लोग खिलखिला कर हँस पड़े।

''आप सब भी गोलगप्पे खाकर बताएँ कैसे बने हैं?'' टिम्मी ने गर्व से कहा।

सब लोगों ने टिम्मी का साथ दिया और कहा, ''व्आआह! बहुत बढ़िया बनाए हैं और टिम्मी तो सबका ध्यान रखती है। पर टिम्मी हम बस एक-एक ही खाएँगे। हम लोग तो खा चुके हैं। अब तुम भी खाओ।''

टिम्मी एक के बाद एक खाती रही, जब तक, उसके पेट में जगह रही। फिर कटोरी उठाकर चटपटा पानी पी गई। ''बहुत मजा आया।'' टिम्मी ने तृप्त होकर कहा।

टिम्मी को बुआ पर बहुत प्यार आ रहा था। आखिर हमेशा से वे उसकी इच्छा का ध्यान रखती हैं। आज भी उन्होंने ही उसकी इच्छा पूरी की। बुआजी की गोद में बैठकर, उसने दोनों बाहें बुआजी के गले में डाल दीं और जोर से नारा लगाया, ''मेरी बुआजी! सबसे अच्छी।'' बुआजी ने अपनी टिम्मी को प्यार से गोद में बिठा लिया।

– जयपुर (राजस्थान)

राजकीय मछलिया

मिजोरम की राजकीय मछली

नघवाँग

– डॉ. परशुराम शुक्ल

यह एशिया निवासी मछली,
भारत में मिल जाती है।
चीन और म्यांमार देश की,
भी यह शान बढ़ाती।।
केवल मिजो और अरुणाचल,
की नदियों में रहती।।
तेज धार के तेज थपेड़े,
जीवन भर यह सहती।।
थक जाने पर चट्टानों के,
नीचे यह आ जाती।
करती है आराम कभी यह,
और कभी सो जाती।।
छोटी-सी हल्की-सी मछली,
पूँछ दो-सिरों वाली।
आँखें बड़ी, गोल मुँह इसका,
लगती बड़ी निराली।।
क्या खाती? कब अंडे देती?
कैसे पहचानेंगे?
शोध करेंगे हम इस पर जब,
तब ये सब जानेंगे।।

– भोपाल (म. प्र.)

दुम में दम

– डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

पूँछ गिलहरी की झबरैली
कुत्ते की क्यों टेढ़ी ?
लम्बे घने बाल वाली
घोड़े की पूँछ घनेरी।

गज की लम्बी सूँड़, मगर
दुम होती कितनी छोटी!
कंगारू की दुम होती
लम्बी, भारी औ' मोटी।

चतुर लोमड़ी अपनी दुम से
मुँह ढककर सो जाती,
लम्बी दुम लंगूर की
जादू के करतब दिखलाती।

शेर की दुम के आखिर में
होते ब्रश जैसे बाल,
बाघ और चीते की दुम भी
करती खूब कमाल।

दुम अलबेली छिपकलियों की
खतरा दूर भगाती,
खुद शरीर से गिरकर
छिपकलियों की जान बचाती।

हाथ, पाँव, पर बन जाती दुम
समय देखती जैसा,
एक जानवर होता ऐसा
जिसकी दुम पर पैसा।

दुम शरीर की रक्षा करती
दुम की महिमा न्यारी,
दुम दबाकर कभी न भागो
यह कायरता भारी।

– मीठापुर, पटना (बिहार)

देवपुत्र का अवधेश विशेषांक देखकर प्रसन्न हो उठीं दीदी माँ

इन्दौर दिनांक ७ जनवरी २०२४। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्व में से एक पूजनीया दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी ने आज प्रात: देवपुत्र के **अवधेश विशेषांक** का अवलोकन किया। वे सेवाभारती द्वारा भव्य श्रीरामोत्सव को संबोधित करने इन्दौर पधारी थीं। प्रात: जब उनके विश्राम स्थल पर देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना, प्रबंध न्यासी सीए राकेश भावसार और कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी ने दीदी माँ को देवपुत्र के अवधेश विशेषांक के संबंध में जानकारी दी तो दीदी माँ का देवपुत्र पर वात्सल्यपूर्ण शुभाशीष फूट पड़ा। वे गद्‌गद कंठ से बोलीं– ''आप लोग धन्य हैं जो इतने पवित्र कार्य में लगे हुए हैं।''

सायंकाल स्थानीय चिमनबाग के हजारों श्रोताओं से भरे भव्य मुक्ताकाशी मंच पर दीदी माँ ने श्रीरामोत्सव में देवपुत्र के इस विशेषांक का लोकार्पण किया तो सारी सभा ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस आह्लाद भरे क्षण का स्वागत किया। लोकार्पण के इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक माननीय डॉ. प्रकाश जी शास्त्री अध्यक्ष स्वरूप विराजमान थे। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति श्री प्रकाश जी सिंघानिया थे। विभाग संघचालक इन्दौर विभाग मा. मुकेश जी मोढ़, सेवा भारती के प्रांताध्यक्ष श्री हजेला जी, श्री रवि भाटिया जी भी इस गरिमामय मंच पर शोभायमान थे। लोकार्पण श्री कृष्णकुमार जी अष्ठाना और सीए श्री राकेश जी भावसार ने कराया।

उल्लेखनीय है कि देवपुत्र का यह विशेषांक भगवान श्रीराम के पूर्वज प्रसिद्ध चक्रवर्ती अवधेशों का सरल व रोचक भाषा में बहुरंगी चित्रों सहित प्रेरक चरित्र प्रस्तुत करता है। अंक की सम्पूर्ण बाल साहित्य जगत में वरिष्ठ संपादकों एवं साहित्यकारों द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा की जा रही है। अंक की संपूर्ण परिकल्पना व लेखन कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी ने की है।

कविता

ठंड चढ़ी तो जले अलाव

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

शीत लहर के हवा महल में,
थर–थर काँपे लोग बेचारे।
गाँव–गाँव में, शहर–शहर में,
शून्य अंश तक पहुँचे पारे।।
जब अलाव का मरहम मिला तो,
भरे ठंड के थोड़े घाव।
ठंड चढ़ी तो जले अलाव।।

धरती की छाती पर बैठा,
दलने लगा दाल फिर कोहरा।
देख नहीं पाते आपस में,
एक–दूसरे का हम चेहरा।।
दिन दूने और रात चौगुने,
बढ़ते जाते इसके भाव।
ठंड चढ़ी तो जले अलाव।।

मोटे लक्कड़, लट्ठ जलाकर,
घेरा डाल–डाल बैठे हैं।
दाँत बज रहे हैं किट–किटकिट,
हाथ पैर ऐंठे–ऐंठे हैं।।
आँच तेज है, नहीं ठंड का,
फिर भी कहाँ हुआ कम ताव।
ठंड चढ़ी तो जले अलाव।।

गया खेत में है बनमाली,
आज रात उसकी पारी है।
ठंड आज कितनी बौराई,
ऊधम किया बहुत भारी है।।
घेर अलाव लोग बैठे हैं,
कैसे भी कर सकें बचाव।
ठंड चढ़ी तो जले अलाव।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

डॉ. बानो सरताज बाल साहित्य जगत की अत्यन्त अनुभवी और वरिष्ठ रचनाकार है। बच्चों के लिए आपकी लेखनी से निकली रचनाएँ विशेषत: गद्य साहित्य बहुत प्रभावी व ज्ञानवर्द्धक होता है। आपके ज्ञानवर्द्धक लेखों की मनोरंजक जानकारी भरी पुस्तकों में से कुछ हैं–

के. के. पब्लिकेशन्स ४८०६/२४ भरतराम रोड दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ से प्रकाशित चार पुस्तकें प्रत्येक का मूल्य है २५०/– रुपये।

छुक छुक रेलगाड़ी

चार रोचक विषयों पर इस संग्रह में बहुत मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धक जानकारियाँ हैं।

रंग निराले सर्कस के

इस लेख पुस्तक में आपके लिए ७ मनभावन विषयों के लेख संकलित हैं।

कॉमिक कैरेक्टर्स और उनके सृजनकर्ता

नाम से ही आकर्षण बढ़ता है कि इसमें आपके लिए कितनी रोचक सामग्री होगी।

सिक्के तेरे कितने नाम

इस पुस्तक में पूरे दस–दस विषय हैं जो आपको अनेक रोचक जानकारी देते हैं।

कल्पना प्रकाशन बी १७७० जहाँगीरपुरी दिल्ली–११००३३ से भी डॉ. बानो सरताज की ३ पुस्तकें प्रकाशित है। तीनों प्रकृति प्रेम जाग्रत करने वाली

झीलें–जलप्रपात

२९, प्रसिद्ध झीलों व १६ जल–प्रपातों का रोचक परिचय देती एक पुस्तक।

बोल मेरी मछली

एक दो नहीं पूरी ६१ प्रकार की चित्र विचित्र मछलियों का परिचय है इस पुस्तक में।

समन्दर की दुनिया

समुद्र में केवल पानी नहीं बहुत कुछ भरा है। क्या–क्या है वह? यह तो आप पुस्तक पढ़ कर ही जानेंगे।

– सूचना –

बाल साहित्यकार बन्धु–भगिनियों! आप भी अपनी बाल साहित्य की प्रकाशित कृतियों का परिचय इस स्तंभ में देना चाहते हैं तो संपादक–देवपुत्र–४०, संवाद नगर, इन्दौर–४५२००१ (म.प्र.) पते पर पुस्तकें भेज सकते हैं।

फंस गया गोलू

चित्रकथा : देवांशु वत्स

SURYA

भारत के साथ
– प्रगति के पथ पर –
अग्रसर

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING

PROFESSIONAL LIGHTING

APPLIANCES

FANS

PVC PIPES

STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

कैप्टन जसबीर सिंह रैना

आतंकवाद के विरुद्ध चलाए गए विशेष अभियानों में अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में चलाया गया ऑपरेशन ब्लूस्टार विशेष चर्चित रहा है। कैप्टन जसबीर सिंह रैना की इस अभियान में विशेष भूमिका रही। ३ जून १९८४ कैप्टन रैना साधारण कपड़ों में स्वर्ण मंदिर में प्रविष्ट हुए उनका उद्देश्य अन्दर छुपे आतंकियों की स्थिति का पता लगाना था। शत्रुओं को थोड़ी भी शंका हो जाने पर न केवल उस दिन बल्कि जीवनभर ही उनसे दुश्मनी गाँठ लेने का पूरा खतरा उठाकर भी वे इस कार्य को सफलता पूर्वक करके लौटे।

आगे का चरण प्रत्यक्ष मुठभेड़ का था। ५-६ जून १९८४ कैप्टन रैना के नेतृत्व में बी कंपनी आगे बढ़ी। मुख्य द्वार में घुसे भी न थे। कि भारी गोलीबारी चालू हो गई। चारों ओर से ऑटोमेटिक मशीनगनें गोली बरसा रही थी पर उसी के बीच कैप्टन अपनी टोली का साहस बढ़ाते आगे बढ़ चले। आतंकवादियों से एक-एक कमरा खाली करवाने में उनका अपूर्व साहस फूट रहा था। उनके घुटनों से कई गोलियाँ टकराईं पर वे रुके नहीं। रक्त बहता गया बहता गया अंततः वे गिर पड़े। उनकी इच्छा न थी कि मौर्चा छोड़कर जाएँ पर साथी उन्हें अत्यन्त घायल स्थिति में लौटा लाए। मिशन पूरा हुआ उनकी अभूतपूर्व साहस की कहानी हर जवान के मुँह पर थी। भारत सरकार ने इस वीर को अशोकचक्र से सम्मानित किया। कैप्टन रैना ५ जुलाई १९५५ को शिमला (हिमाचल प्रदेश) में जन्मे। ३ सितम्बर १९७७ को वे ब्रिगेड ऑफ गार्डस् में सम्मिलित हुए थे।

पहेलियाँ

बाल पहेलियाँ

– गोविन्द भारद्वाज

१) मूँछ मरोड़े खड़े रहे जो,
आजाद रही जिसकी बोली।
बिगाड़ जरा न पाई उनका,
अँग्रेजों की कोई गोली।

२) जयहिंद का बना नारा था,
स्वयं फौज का वो प्यारा था।
नेता नाम कहा भारत में,
बना गगन का वो तारा था।

३) हैट लगाने वाला,
था जो वीर सिपाही।
फाँसी पर झूल गया,
खून बनायी स्याही।

४) क्राँति की अलख जगायी,
था वो भी वीर सिपाही।
बागी हो अँग्रेजों से,
फाँसी जिसने थी पायी।

५) भारत भूमि के लाल थे,
प्रधान बड़े कमाल थे।
दुश्मन के लिए काल थे,
भारती के वो भाल थे।

– अजमेर (राजस्थान)

उत्तर :- १) श्री चंद्रशेखर आजाद, २) श्री सुभाषचंद्र बसु, ३) श्री भगतसिंह, ४) श्री मंगल पांडे, ५) श्री लाल बहादुर शास्त्री।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

रवि लायद का विस्मयकारी भारत

भारत वास्तव में अदभुत देश है। यहां के मन्दिरों में केवल ईश्वर की ही पूजा नहीं होती वरन यहां ऐसे मन्दिर भी मौजूद हैं जिनमें जानवरों तक को श्रृद्धा से पूजा जाता है। कर्नाटक के बेंगलुरु का बैल मन्दिर इसी प्रकार की आस्था का एक ज्वलंत प्रमाण है। इतना ही नहीं चन्नापटना का डॉग टेम्पल और केरल के मन्नारसला का श्री नागराज भी इसी श्रेणी के उदाहरण हैं। राजस्थान के जयपुर का गलताजी भी विशेषतः बन्दर मन्दिर के रूप में ही पूजा जाता है।

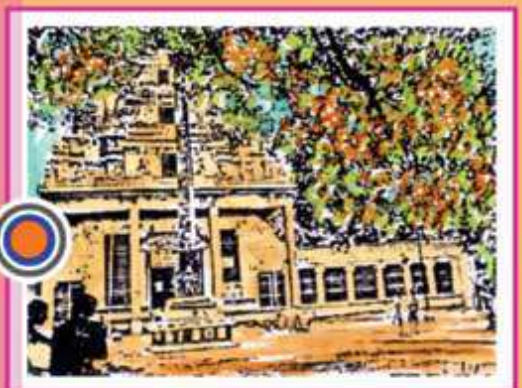

हैदराबाद में एक पुरानी बस्ती है 'मगर की बावली' पर इस जगह को अब इस नाम से कोई नहीं जानता। इसकी पहचान अब 'बौनों की गली' के नाम से है क्योंकि यहां रहता है राम राज चौहान का परिवार। यह एक ऐसा परिवार है जो बीती तीन पीढियों से बौनेपन का शिकार है। 21 सदस्यों वाले इस परिवार में 18 बौने हुए जिनमें अब केवल 9 जीवित हैं और सब के सब ही बौने हैं। रामराज इसे अनुवांशिक रोग मानते हैं जो इनके दादा के समय से चला आ रहा है। रामराज को बहुत पीड़ा है कि उनके परिवार को देखकर हँसते तो सब हैं, पर काम कोई नहीं देता।

भारत चीनी के उत्पादन का जनक है। यहां लगभग 2000 साल से यह उद्योग स्थापित है जिससे सम्बंधित गन्ने के रस से गुड़ आदि बनाने के वर्णन तो 6000 वर्ष पूर्व के भी उपलब्ध हैं।

सी.सी.डे. या कैफ़े कॉफ़ी डे देश के युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय है। इसके संस्थापक वी.जी.सिद्घार्थ द्वारा अपने ऊपर लदे कर्ज़ से परेशान होकर आत्महत्या कर लेना कंपनी के लिए एक बड़ा झटका था। सिद्घार्थ के जाने के बाद उनकी पत्नी मालविका हेगड़े ने हिम्मत व कुशलता से कम्पनी को कुछ इस तरह सम्भाला कि सन 2019 में जो कर्ज़ 7000 करोड़ का था वह मार्च 2021 तक घटकर कुल 1,779 करोड़ ही रह गया। इस समय सी.सी.डे. भारत के 165 शहरों में 572 कैफे संचालित कर रहा है। 36,326 वेंडिंग मशीनों के साथ सी.सी.डे. देश का सबसे बड़ा कॉफ़ी सर्विस ब्रांड है। निश्चित तौर पर मालविका ने उन महिलाओं के लिए एक मिसाल कायम की है जो जीवन में चुनौतियों के आगे घुटने टेक देती हैं।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

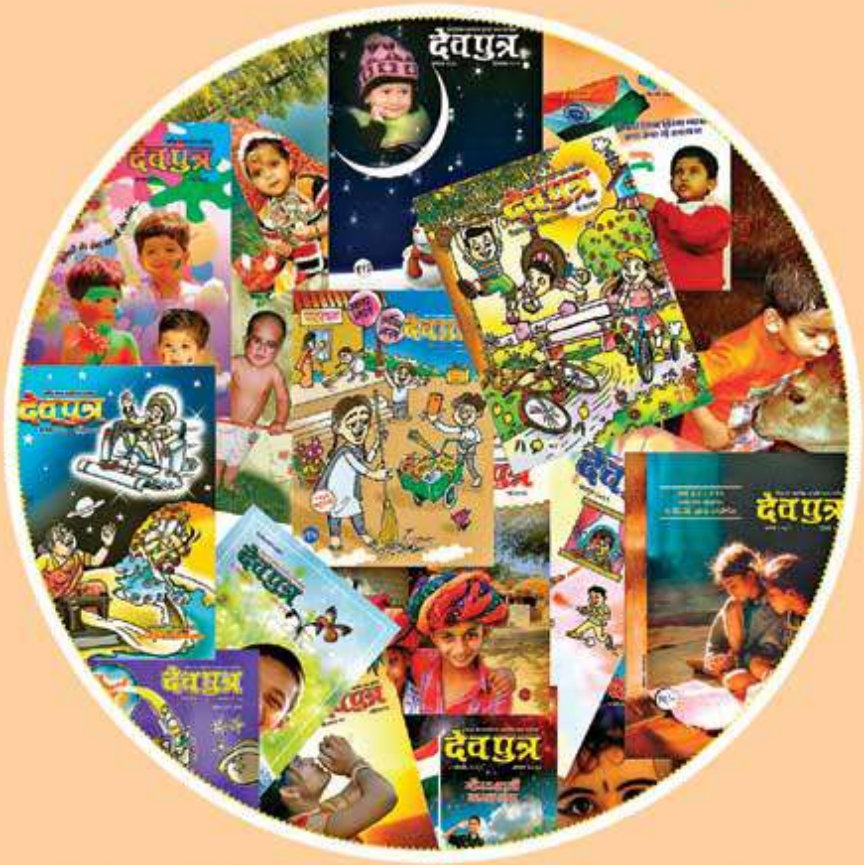

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना